दीदार

सूफ़ी गज़लें

बेनिशाँ ना - तमाम

बेनिशाँ ना-तमाम

बेनिशाँ ना-तमाम का असली नाम योगेश कुमार है। ये पिछले 20 वर्ष से कनाडा निवासी हैं।

इसके पहले आप भारत में पढ़े, इंजीनियर बने व भारत में नौकरी की।

बेनिशाँ ना-तमाम ने उर्दू की पढ़ाई नहीं की, न ही वे उर्दू लिपि पढ़ - लिख सकते हैं।

आपकी गजलों की रचना सूफियाना तरीके पर है। उनके शब्दों में गजलें लिखना उनके लिए "इबादत का तरीका है"। जीव व ईश्वर के बीच की वार्ता है।

अनुक्रमणिका

1. नीम बाज़ आँखों ने लूटी 1
2. सारे जहां का सौदा 2
3. अता हो जाए क़रीबो कुर्ब 3
4. जान भी दे दी 4
5. मौजूद भी रहते हैं हर शै 5
6. दिल चाक किए जाते हैं 6
7. कर सके मुझे जो कैद 7
8. ज़रा ठहर जाइए 8
9. ये कौन सा दयार है 9
10. ऊँचे अंजुम फिर डूब गए 10
11. खत्म कर दे तबाह कर दे 11
12. होगी ये दुनिया तमाशा................................ 12
13. मजाजी और हकीकी का 13
14. ए पीरे मुगां.. 14
15. बरास्ते ज़िक्रे कल्ब 15
16. आतिशे इश्क़ ने.. 16
17. इक नज़र में कराई सैर 17

18. आशिक़ों का कर दिया ढेर 18
19. बेनिशाँ मेरे न होने की 19
20. गर्दूं अफलाकों से 20
21. उनकी फुर्कत का वो पल 21
22. ऊंची परवाजों के बाद फिर 22
23. दुनिया के वसवसों में 23
24. तुम्हारी रहनुमाई से बेख़बर 24
25. दौनों जहां को करे रौशन 25
26. रात ज्यों ज्यों चढ़ी....................................... 26
27. कोई तो चारा होगा...................................... 27
28. जब तक जिऊं तेरे इश्क़ में दिल 28
29. इस दारे फ़ानी से... 29
30. मेरी हस्ती को गर्दूं....................................... 30
31. सारी दुआएँ बक्श दीं 31
32. शब ए मैराज के लिए.................................. 32
33. जहां तेरा जल्वा मौजज़न 33
34. ख़ुद अपनी ही मौत से 34
35. रात भर फैजान बरसा 35
36. पराये से हो गए हैं....................................... 36

37. बाँध ले जो दरिया को 37
38. बेअदब बेनसीब होता है 38
39. पहुँच गया आखिर वहाँ तक 39
40. निशां मिटा के अपना 40
41. ढूँढता रहा उम्र भर 41
42. तेरी दीद की ख़्वाहिश का 42
43. होश उड़े जाते रहे 43
44. तेरी रहबरी ने कुछ....................................... 44
45. पेश है ये ख़ाकसार 45
46. दर पर तुम्हारे खड़ा है................................. 46
47. मंज़िलें तय करीं नागहां.............................. 47
48. उनके अल्ताफों को 48
49. उसके मुक़ाबले में कौन मौज़ू...................... 49
50. अगर करना है तरक़्क़ी 50
51. जान भी ले ली.. 51
52. मिलने के बाद फिर भी 52
53. धीरे धीरे तेरी याद में.................................. 53
54. जमाले मुर्शिदी का असर है.......................... 54
55. सारे इसियां निसियां माफ़ हुए 55

56. भूल जाऊँ तेरे इश्क में 56
57. नूरे वहदत से मेरा हो 57
58. उसकी निगाहें नाज़ से 58
59. हुस्नो इश्क के वलवले थे 59
60. तेरे फज्लो रहम को बस 60
61. हासिल हो जाए 61
62. या इलाही दे मुझे 62
63. हक़ीक़त किसी मज़हब की 63
64. या खुदा दूर कर 64
65. बुलहवस चश्मकों से 65
66. फक्रो फ़ना की दौलतें 66
67. मैं नहीं हूँ ज़रूर 67
68. वो इबादत है कैसी 68
69. ए मेरे दिले आशना 69
70. अपना नाम अता किया 70
71. इसमें मेरा कुछ नहीं 71
72. कुल्जमे इश्क मुझ पर 72
73. फज्ल से बक्शी 73
74. एक एक करके राजे हक़ीक़त 74

75. तुझपे मरने वालों की.. 75
76. वो आए और चले गए 76
77. बेचैन दिल को आराम नहीं................................ 77
78. चला दिया तीरे नज़र.. 78
79. दुनिया को छोड़ दर पे तेरे................................ 79
80. ज़िन्दा है इक फ़क़ीर 80

1. नीम बाज़ आँखों ने लूटी

नीम बाज़ आँखों ने लूटी जागीर हस्ती की मेरी
इक नज़र से तोड़ दी जंजीर हस्ती की मेरी

मैं रहा न मुझ में खुद कोई और मुकामी हो गया
अपनी अजमत से छीन ली तस्ख़ीर हस्ती की मेरी

शौके शहादत थी मेरी सर सौंपने पे नाज़ था
बेसाख्ता कुर्बत से बढ़ाई तासीर हस्ती की मेरी

इक मुअम्मा है कि सरफरोश भी मैं खुद ही हूँ
खुद ही खुद तामील करूँ तामीर हस्ती की मेरी

महब हूँ ख्याले यार में खल्वत पसंद इस दौर में
उज़लते अफ़्कार फ़रोज़ा तस्वीर हस्ती की मेरी

जुस्तजू जिसकी की वो राज़दां भी मैं ही था
तसव्वुफ़ का खेल था तदबीर हस्ती की मेरी

तेरे तसद्दुक के निसार तेरे ख़ुलूस के निसार
चाक गिरेबान 'बेनिशाँ' नहीं तकसीर हस्ती की मेरी

मुक़ामी - स्थित, अजमत - कृपा, तस्ख़ीर - सम्मोहन, कुर्बत - सामीप्य, तासीर - प्रभाव, मुअम्मा - पहेली, तामील - अनुसरण, तामीर - निर्माण, महब - लीन, खलवत - एकांत, "उज़लते अफ़्कार फ़रोज़ा" - एकांत चिंतन में रौशन, जुस्तजू - इच्छा, राज़दां - रहस्य का भागीदार, तसव्वुफ़ - दर्शन, तदबीर - तरकीब, तसद्दुक - कृपा, खुलूस - निर्मलता, चाक गिरेबान - अहं से रिक्त, तकसीर - गलती

2. सारे जहां का सौदा

सारे जहां का सौदा इस बेखबरी के वास्ते
नफ्स की तुग़ियानी की चारागरी के वास्ते

जुस्तजू में हूँ खुद की बारहा मैं क्यों ढूंढा किया
बेखुदी बस रास आई तेरी दीदावरी के वास्ते

दुनिया की कशमकश से उकता गया हुआ मकीं
कामिल दिलकश हमसफर की हमसफरी के वास्ते

मुंतज़िर हूँ मैं उस होशरुबा खिरामे नाज़ का
दस्तगीरी के वास्ते जल्वागिरी के वास्ते

पस्तिए हिम्मत न होउं कुलफते राहे अज़ाब
देख लीजो आए न आंच तेरी पयम्बरी के वास्ते

ये शिगुफ्ता परी पैकर चेहरा ये तेरी इनायतें
फलक तू गवाह रहियो इस सरवरी के वास्ते

तू ही तू है हर जगह मेरा पता अब लापता
'बेनिशाँ' मतलूब है इस दानिशवरी के वास्ते

नफ्स - मन, तुग़ियानी - बाढ़, चारागरी - इलाज, दस्तगीरी - मदद, जल्वागिरी - महानता, जुस्तजू - इच्छा, दीदावरी - दर्शन, कशमकशे दुनिया - दुनिया की उलझन, मकीं - स्थित, मुंतजिर - प्रतीक्षित, होशरुबा - होश उडाने वाली, खिरामे नाज़ - नाज़ भरी चाल, कामिल - पूर्ण, पस्तिए हिम्मत - साहस में कमी, कुलफते राहे अज़ाब - राह के कष्ट, पयम्बरी - संदेश वाहन, शिगुफ्ता परी पैकर - खिला हुआ सुंदर, इनायतें - कृपा, फ़लक - आसमान, सरवरी - प्रधानता, मतलूब - वांछित, दानिशवरी - बुद्धिमत्ता

3. अता हो जाए क़रीबो कुर्ब

अता हो जाए क़रीबो कुर्ब इस जहाँ में बस
नाम इलाही रौशन रहे मेरी ज़ुबां में बस

फ़िक्र नहीं गर्दिशे अय्याम की या फिर हो राहत फजा
पुर नूर चिराग़ जलता रहे तूफ़ां में बस

ये कश्मकशे दहर और ये तल्खिए हयात
राहे रास्त का हौसला जगे इंसां में बस

हैं नहीं नागवार कुछ कयामे राह ए सिद्क में
जब तक जिए इमां रहे जिस्मों जाँ में बस

वारफ़तगी ज़ाहिर न हो तकल्लुम में दाइमी
खुलूस और शिकेब रहे सबकी जबां में बस

नाजां न हो आराइशे हस्ती भी हो नापैद
सर ढूँढे पे मिले नहीं गिरेबां में बस

मेरा होना रहे राज़ मेरा मरना भी रहे राज़
जिए तो दासतां में 'बेनिशाँ' मरे दासतां में बस

गिरेबां - गर्दन, इलाही - ईश्वर, रौशन - प्रकाशित, गर्दिशे अय्याम - काल चक्र, राहत फजा - आनंद दायक, पुर नूर - पूर्ण प्रकाशित, कश्मकशे दहर - जीवन संघर्ष, तल्खिए हयात - जीवन कटुता, राहे रास्त - सही रास्ता, नागवार - मुश्किल, कयामे राह ए सिदक - सत् पथ आरूढ़ता, वारफ़तगी - स्वच्छंदता, ज़ाहिर - प्रकट, तकल्लुम - बातचीत, दाइमी - स्थायी, शिकेब - धैर्य, नाजां न हो - गर्व न हो, आराइशे हस्ती - जीवन होने की खूबसूरती, नापैद - अजन्मा, क़रीबो कुर्ब - सामीप्य, दासतां - कहानी

4. जान भी दे दी

जान भी दे दी क्या अब भी हिसाब बाक़ी है
अर्ज़ मुज्तरी मैंने पेश की तिरा जवाब बाक़ी है

बे हदूद दौड़ता जा रहा है अंदाज नफ्सानी मेरा
नफ्सकुशी बामुश्किल जीस्त में शबाब बाक़ी है

ये तुम्हारी उम्मीदियां दराज़ और ये मेरा इज़्तिराब
इंतज़ार में हूं तेरी उस नज़र का इंक़लाब बाक़ी है

मैं हूं शोरीदासर और उधर तुम हो अगियारे अदम
बेताब अश्कों तुम्हारा जुनूं सैलाब बाक़ी है

हो गई पैहम सबूरी बहुत हुआ इंतिहाए ज़ब्त
अब थोड़ा तो चैन लो कुछ आदाब बाक़ी है

अर्जे नियाज़े ग़म सुनो लब आशना बरहम सुनो
सीना ब सीना खेल हुआ फैज़ानी शराब बाक़ी है

सारी नियाजें पूरी हुईं सारी दुआएँ भी हुईं पूरी
बका उल बका होने का 'बेनिशाँ' एक ख़्वाब बाक़ी है

मुज्तरी - व्याकुलता, बे हदूद - बिना सीमा, नफ्सानी - मायावी, नफ्सकुशी - मनोनिग्रह, जीस्त - जीवन, शबाब - यौवन, दराज - लंबी, इज़्तिराब - व्याकुलता, शोरीदासर - दीवाना, अगियार - परायापन, अदम - अनस्तित्व, तुगियानी - बाढ़, पैहम - निरंतर, सबूरी - सब्र, इंतिहाए ज़ब्त - बर्दाश्त की सीमा, अर्जे नियाजे ग़म - दुखी प्रेम की प्रार्थना, बरहम - टूटन, नियाज़ - आकांक्षा, बका उल बका - पूर्ण विलय

5. मौजूद भी रहते हैं हर शै

मौजूद भी रहते हैं हर शै कहते हैं वो रूखसत हो गए
मुझमें समा गए खुद गोया सदमा-ए-फुरकत हो गए

सागगार तो हुए न हम मरहमे असरार ख़्यालों के
जीना तो जीना है नहीं अब जीने की आदत हो गए

वारिद दिल में हुए मेरे मुकम्मल क़ब्ज़ा कर लिया
दिल तो मेरा रहा नहीं अब दिल की हसरत हो गए

मदारत कितनी भी की थी आसूदा क्यों हुए नहीं
सुकूनो सुकूत में इस तरह बेवजह ही वहशत हो गए

काम चल सकता नहीं अब उस असलाफ के सिवा मेरा
पनाह तो माँगा किया करे और दिली ज़रूरत हो गए

वो सामने भी थे क़रीब भी थे देखने का ज़ौक़ था
वो यहीं हैं कहीं गए नहीं वो पुर-वुसअत हो गए

वो खलवत मेरी वो जलवत तेरी यूँ फिर ठहर जाना तेरा
बात बस इतनी है 'बेनिशाँ' हम पुर-मसर्रत हो गए

सदमा - धक्का, फुरकत - जुदाई, रूखसत - विदा, पुर-वुसअत - पूर्ण क्षमतावान, सागगार - अनुकूल, मरहमे असरार - रहस्य मर्मज्ञ, वारिद - उतरे, मुक्कमल - पूर्ण, मदारत - आवभगत, आसूदा - संतुष्ट, सुकून - चैन, सुकूत - एकांत, वहशत - घबराहट, असलाफ - बुज़ुर्ग, पनाह - शरण, ज़ौक़ - चाव, खलवत - एकान्त, जलवत - सभा, पुर मुसर्रत - पूर्ण चैन

6. दिल चाक किए जाते हैं

दिल चाक किए जाते हैं मय भी पिलाए जाते हैं
आवाज़े गैब मुझे बड़े अल्ताफ़ से सुनाए जाते हैं

हैं बुलहवस हम तेरी इबादत के क़ाबिल नहीं
क्यों हम जैसे नाकिस के नख़रे उठाए जाते हैं

मआले आशिक़ी है बस तेरी ज़ात में फ़ना होना
वल्लाह रहमानी तेरी जो ऐबों को छुपाए जाते हैं

खाकिया हूँ मैं बुलन्द है तू यकता है तू अज़ीम है तू
पुर-रौशन बनाए जाते हैं और हस्ती मिटाए जाते हैं

मानूस हैं वो मेरी सब तकसीरों से यों हर तरह
करके किर्बियाई मेरे बदएमाल जलाए जाते हैं

तसद्दुक उनका कभी अफलाकों में नहीं महदूद
दहरो कौनेन के छुपे राज़ों को बताए जाते हैं

तुर्फाकारी कमाल उनकी सबसे अजब और बेमिसाल
हस्ती के चिराग़ों को अबस 'बेनिशाँ' बुझाए जाते हैं

चाक - चीरना, अल्ताफ़ - कृपा, आवाज़े गैब - ईश्वरीय नाद, दहरो - जगत, कौनेन - परलोक, बुलहवस - हवस के गुलाम, नाकिस - अयोग्य, मआले आशिक़ी - प्रेम का परिणाम, ज़ात में फ़ना - ईश्वर निमग्न, रहमानी - ईश्वरीयता, खाकिया - पैरों की धूल, बुलन्द - ऊँचा, यकता - अद्वितीय, मानूस हैं - परिचित हैं, तकसीरों - अपराधों, किर्बियाई - बुज़ुर्गी, बदएमाल - दुश्कर्म, तसद्दुक - कृपा, अफलाक - आसमान, महदूद - सीमित, रोशन - प्रकाशित, तुर्फाकारी - विलक्षणता, अबस - अनियंत्रित

7. कर सके मुझे जो कैद

कर सके मुझे जो कैद ऐसा घर बना नहीं
तायरे लाहूती हूं मैं मेरा कोई नक्शे पा नहीं

तौहीद में हूँ मैं गुम हूँ खला में हूँ आशकार
खुद को ख़ोजा दूर तक फिर भी मगर मिला नहीं

मर चुका मरने के पहले ताअते हक में हूं फ़ना
कशमकशे दहर रहूँ ऐसी मेरी अदा नहीं

दिल ए सद चाक लिए हुए घूमता हूँ गली गली
जाविदां चिराग हूँ मैं जो कभी बुझा नहीं

किस्सा ए खुद निगहदारी जो कभी लिखा नहीं
सुनते रहे तुम ताउम्र मैंने तो कुछ कहा नहीं

तुग़ियानी है फज्ल की कैफ़ियत नातमाम है
मुहीते बेकरां पुर असर महशरी के सिवा नहीं

सिजदा रवां उस हुस्न पे जो कभी दिखा नहीं
सनम आशना हो 'बेनिशाँ' ऐसी मेरी वफा नहीं

तायरे लाहूती - शून्य का पक्षी, नक्शे पा - पैरों के निशान, तौहीद - एकईश्वरवाद, खला - शून्य, आशकार - प्रगट, ताअते हक - ईश्वर आराधना, फ़ना - लीन, कशमकशे दहर - जीवन संघर्ष, सद चाक - सौ टुकड़े, जाविदां - अमर, खुद निगहदारी - आत्म निरीक्षण, ताउम्र - पूरी उम्र, तुग़ियानी - बाढ़, फजल - कृपा, कैफ़ियत - कृपा, नातमाम - अमर, मुहीते बेकरां - अथाह सागर, पुरअसर - पूर्ण प्रभावशाली, महशरी - प्रलय, सिज़दा रवां - पूजा रत, सनम आशना - मूर्ति पूजक

8. ज़रा ठहर जाइए

ज़रा ठहर जाइए अभी तैयार नहीं हूँ मैं
दुनिया के मौज मेले में ख़रीदार नहीं हूँ मैं

फरेबे क़ज़ा भूल गया कनाअत को पहुँच गया
ख़्वाहिशें सब ख़त्म हुईं अब बेक़रार नहीं हूँ मैं

तेरी पैहम कोशिशें दिल सद चाक करा किए
ये भी है क्या बेक़रारी सीना फिगार नहीं हूँ मैं

निशातो लज्ज़त मिल गई वहम सारे मिट गए
गर्क हूँ तेरे ख़्वाब में अभी बेदार नहीं हूँ मैं

उठ गया पर्दा ए खुदी सब रूदाद अफशां हुए
बेखुद हूँ कबसे पड़ा गुनहगार नहीं हूँ मैं

क़ैदे हस्ती से निकल गया हर नफस हुई नशात
लाजवाल जो हो गया कोई बीमार नहीं हूँ मैं

इतंखाब हुआ उम्मत में तेरी बतौर एक गुलाम के
बेपनाह तमन्नाओं में 'बेनिशाँ' गिरफ़्तार नहीं हूँ मैं

गर्क - डूबा हुआ, बेदार - जागृत, फरेबे कज़ा - मृत्यु धोखा, कनाअत - संतोष, पैहम - निरन्तर, सद चाक - सौ टुकड़े, सीना फिगार - विक्षत हृदय, निशातो लज्ज़त - आनंद, खुदी - अस्तित्व, रूदाद - वृतांत, अफशां - प्रकट, राज़दार - राज जानने वाला, नफस - साँस, नशात - हर्ष, लाजवाल - अमर, इतंखाब - चुना हुआ, उम्मत - समूह, अज़ीम - प्रमुख, बेपनाह तमन्नाएं - असीम इच्छाऐं

9. ये कौन सा दयार है

ये कौन सा दयार है जहाँ अपनी ख़बर नहीं मुझको
होशो खिरद का पता नहीं हस्ती नज़र नहीं मुझको

मैं हूँ गुंचाए मलकूती मैं तायरे लाहूती हूँ
इस दारे फ़ानी में कहीं रही गुज़र नहीं मुझको

जाविदां मैं हो गया महे कामिल मैं हो गया
होश की पूछो तो होश है कहीं मगर नहीं मुझको

उस सोजे दरूं में मैं कब से कब का हो चुका हूँ गुम
मर मिटा परवाना हूँ है कभी सहर नहीं मुझको

क़ैदे हस्ती से निकल गया हुआ वजहे-इल्तिफात
कश्मकशे दहरे दुनिया का अब कहीं असर नहीं मुझको

अन्दोहो मुसीबत तो अब नमोतबर सी बात है
जल चुका हूँ कभी का मैं कनाअत मगर नहीं मुझको

अब क़ैदे तलातुमे हयात से मैं तो नारसाई हो गया
कहे देता हूँ 'बेनिशाँ' है मौत का डर नहीं मुझको

दयार - स्थान, गुंचाए मलकूती - अनंत की कली, तायरे लाहूती - अनंत का पक्षी, दारे फ़ानी - नश्वर संसार, जाविंदा - अमर, महेकामिल - पूर्ण चन्द्र, खिरद - ज्ञान, सोजे दरूं - भीतरी आग, परवाना - पतंगा, सहर - सुबह, कैदे हस्ती - होने की कैद, वजहे-इल्तिफात - कृपा के कारण, कश्मकशे-दहरे दुनिया - दुनिया का जीवन संघर्ष, अन्दोहो मुसीबत - दुख व व्यथा, नमोतबर - अविश्वसनीय, कनाअत - संतुष्टि, नारसाई - पहुँच के बाहर, तलातुमे हयात - जीवन की उथल पुथल

10.ऊँचे अंजुम फिर डूब गए

ऊँचे अंजुम फिर डूब गए मँझधार में
दिल अबस अब रहा नहीं मेरे इख़्तियार में

पूछो न हाल मुझसे तुम उन मलक मुख्तारों का कभी
नाकामयाब जो हो गए देखो उस फस्लो बहार में

वो दरवेश ब कमाल उसकी पुर्शिसें पाएमाल
खुलते गए सब राज जानां फकीर कामिल के प्यार में

चंद ताअस्सुबी लोगों की इदराक का तो हाल ये
सारे जहाँ को बाँट दिया इक मज़हबी दीवार में

बज्म में यूँ आते चले गए और जल्वागरी दी बिखेर
होशो दानिश के पते नहीं फिर गमे आज़ार में

उसकी तावानी न पूछ उसकी तुगयानी न पूछ
जमाले यार देख मचला दीवाना तो हर बार मैं

वहम ख़त्म हुए तमाम ताम्मुल ख़त्म हुए तमाम
अब क्यों खड़ा है तू 'बेनिशाँ' दीद के इतंज़ार में

अजुंम - तारे, होशो दानिश - होश व बुध्दि, गमे आज़ार - कष्ट, मलक - फरिश्ते, मुख्तारों - शासकों, फस्लो बहार - बसंत की उपज में, दरवेश - साधु, ब कमाल - आश्चर्यपूर्ण, पुर्शिसे - हाल, पाएमाल - सदकर्मी, जानां - प्रियतम, कामिल - पूर्ण, ताअस्सुबी - संकीर्ण, इदराक - बुध्दि, मजहबी - धार्मिक, बज्म - महफिल, जल्वागिरी - प्रभाव, अबस - बिना बस के, इख्तियार - नियंत्रण, तावानी - दीप्ति, तुगयानी - तूफ़ान, जमाल - सौंदर्य, ताम्मुल - संकोच, दीद - दर्शन

11.खत्म कर दे तबाह कर दे

खत्म कर दे तबाह कर दे चैन सुकून सब अजाब कर दे
आज रात ही तोड़ दे कूज़ा मेरे होने का किस्सा ख्वाब कर दे

तुम को पाने की कोशिशें सब पूरी नाकाम हो चुकी हैं
सबको खोऊँ तुझको पाऊँ ऐसा कुछ तो हिसाब कर दे

बड़ी है मुश्किल इस दारे फानी वजूद अपना समेट रखना
इक आग दिल में लगी हुई है जीस्त में मेरी इंकलाब कर दे

तुझको पाना या खुद को पाना दौनों ही मसले हैं एक यकसां
दौनों के बीच का फर्क मिटा दे कोशिशें मेरी कामयाब कर दे

बस एक रात बची है बाकी कल का दिन जाने फिर कहां हो
पर यही मांगता हूँ तुम से करम अपना बेहिसाब कर दे

हस्ती का ये आशियां मेरा बन जा बागबां और आग दे दे
जरा भी नुकता कहीं बचे ना पूरी तरह से तू राख कर दे

जान अब लब तक आ चुकी है सामने मेरे आ जाओ वरना
कहीं न ऐसा हो चोट खा कर 'बेनिशाँ' तुम्हें बे नकाब कर दे

करम - कृपा, दारे फानी - नश्वर संसार, वज़ूद - अस्तित्व, जीस्त - जीवन, मसले - तथ्य, यकसां - एक जैसे, कूज़ा - पात्र, आशियां - घोंसला, बागबां - माली, नुकता - अंश, बे नकाब - रहस्योद्घाटन

12.होगी ये दुनिया तमाशा

होगी ये दुनिया तमाशा तमाशबीन नहीं हूँ मैं
हूँ दुनिया के इस मकान में पर मकीन नहीं हूँ मैं

बहुत हुई पुरकारियां बहुत हो गई निगहदारियां
उकता गया कशमकशों से जानां मुतमईन नहीं हूँ मैं

नफ्सो खिरद के परदों में छुपी हुई है ये मेरी अना
ढूंढता हूं जिस खुद को मैं खुद से कमतरीन नहीं हूँ मैं

इक चाह है उस आग की जला रख दे जो गिलाज़त तमाम
दिल में सोजे दुरूं लिए कहीं खुदबीन नहीँ हूँ मैं

निकल गया दायरे अय्याम से बच गया हूं अंजाम से
जिसमें मज़ाजी फसल हो पैदा वो जमीन नहीं हूँ मैं

मैं हूँ बेकैद जौलागाह हैं तेरे ये हफ़्त आसमान
कड़कती धूप हूँ जुहद की मैं नसीम नहीं हूँ मैं

गर्दूं अफलाक अब मेरे आराइश के हैं लबक
मश्शातगी में जो हो रवां 'बेनिशाँ' वो हसीन नहीं हूँ मैं

तमाशबीन - दर्शक, जुहद - विरक्ति, नसीम - सुबह की हवा, पुरकारियां - चतुराइयां, निगहदारियां - निरीक्षण, कशमकशों - संघर्षो, मुतमईन - संतुष्ट, नफ्सो खिरद - मन बुद्धि, गिलाजत - गंदगी, सोजे दुरूं - अंदरूनी आग, खुदबीन - निरीक्षक, दायरे अय्याम - समय चक्र, अंजाम - अंत, मजाजी - दुनियावी, बेकैद - मुक्त, हफ़्त आसमान - सात आसमान, जौलागाह - घूमने की जगह, मकीन - रहनेवाला, गर्दूं अफलाक - आकाश, आराइश के लबक - श्रंगारिक उपाधि, मश्शातगी - श्रंगार, रवां - लीन

13.मजाजी और हकीकी का

मजाजी और हकीकी का मेल है बाहमी नहीं
मज़हबी पेचों ख़म की ये सरगोशी मुझे लाज़मी नहीं

हूँ ज़ुदा न हूँ शरीक ताअस्सुबी ख़्यालों में कभी
फ़ैजो करम की तुग़ियानी उनकी कभी थमी नहीं

पहले महदूद थे इस जहां में अब वो बेहद हो गए
उनके कूच कर जाने की फ़िज़ा है मातमी नहीं

अजल अबद के पहले से लेकर के अब आज तक
नाक़ाबिल हूँ दुनिया के मैं कश्फ भी दाइमी नहीं

सादालौही पासबानी उश्शाकी की बड़ी शान है
है संगदिल वो बशर जिसकी आंखों में नमी नहीं

बाँटते रहते हैं ख़िलाफ़त अपने हर एक गुलाम को
उसके चाहने वालों को आसूदगी की कमी नहीं

सब तरफ़ ही खोज की ढूँढा किया था चार सू
जहाँ तेरा न औज़ हो 'बेनिशाँ' ऐसी ज़मीं नहीं

मजाजी - दुनियावी, हकीकी - ईश्वरीय, बाहमी - पारस्परिक, फैज़ो करम - कृपाओं, तुगियानी - बाढ़, ताअस्सुबी - मज़हबी, पेचोख़म - बारीकियां, सरगोशी - शिकायत करना, लाजिमी - उचित, महदूद - सीमित, बेहद - असीमित, मातमी - शोकपूर्ण, अजल अबद - अनादि अनंत, कश्फ - पूर्वानुमान, दाइमी - स्थाई, सादालौही - सरल स्वभाव, पासबानी - रक्षा, उश्शाकी - आशिकी, संगदिल - पत्थरदिल, बशर - इंसान, ख़िलाफ़त - शिष्यता, आसूदगी - समृद्धि, चार सू - चारों तरफ, औज़ - ऊँचाई

14.ए पीरे मुगां

ए पीरे मुगां अब तेरे सजदे में जिस्मो जान है
हुब्बे पीराने तरीक़त यही मेरी पहचान है

मिला दिया तूने मुझको अपनी ज़ात से बेसबात
हज़ार सदके कदमों में तेरे तुझ पे दिल क़ुर्बान है

जुर्रतें इसियां कभी अब उठती नहीं है भूल से
दिल मेरा हो चुका नफ्सानी वसवसों से अन्जान है

कैसे करूँ मैं नुमूद आलिया अज़मत को तेरी
अल्ताफो करम करते रहना तेरी बुज़ुर्गी शान है

कर दिये तै हज़ार मुक़ाम नज़रे इनायत से तेरी
यही मेरी है जिन्दगी और यही मेरा ईमान है

हूँ जलीलो खार मैं बुल हवस नफ्सानी रौ
दी पनाह मुझ नाकिस को तेरा बड़ा अहसान है

क़ाबिल नहीं दीदार के पर देख बस ये मुज्तरी मेरी
'बेनिशाँ' तेरी अदालत में यही मेरा बयान है

हुब्बे पीराने तरीक़त - महान आत्माओं का अनुसरण, पीरे मुगां - मैखाने का मालिक, ज़ात से बेसबात - स्थिति में नि:शंक, जुर्रतें इसियां - पाप करने का साहस, नफ्सानी वसवसों - ग़लत विचार मन के, नुमूद - प्रकट करना, आलिया - सर्वोत्तम, अज़मत - महानता, अल्ताफो करम - कृपाएँ, मुकाम - स्थान, जलीलो खार - भर्त्सना योग्य, बुल हवस - हवस का गुलाम, नफ्सानी रौ - मन अनुसार चलने वाला, नाकिस - अपूर्ण, कमजर्फ - अक्षम, मुज्तरी - व्याकुलता

15.बरास्ते ज़िक्रे कल्ब

बरास्ता ए ज़िक्रे कल्ब तेरी ज़मीं हम पा गए
उनकी फुर्कत को हम अपनी क़िस्मत में लिखा गए

मुझमें समाए रहते हैं फिर भी हैं कुछ ज़ुदा ज़ुदा
मरहला ए मारफत में नसीब अपना जगा गए

न पूछा क्या क्या मिला उनकी बारगाह में 'बेनिशाँ'
ताअते हक़ वो बक्श गए कुल्ज़ुमे इश्क़ हम पा गए

फना के बाद जब हुई मुलाक़ात उनसे एक बार
अपनी डूबी कश्ती की दास्ताँ रो रो के सुना गए

वो तो हैं उधर और मैं हूँ इधर अजब है ये मुआमला
इस पर सुनाई कहानी ख़ुद की और मुझको रूला गए

सब चिलमन हुए चाक बस एक ही बाक़ी रहा
आखिरी पर्दा गिरा कर के आ के मुझमें समा गए

मेरी हस्ती की बज्म में शब चिराग़ां आखिर यूँ हुआ
जला के चिराग़े आखिरत 'बेनिशाँ' जिंदगी बुझा गए

बरास्ता ए ज़िक्रे कल्ब - ह्रदय जाप के द्वारा, मरहला ए मार्फत - ज्ञान की स्थिति, फुर्कत - विछोह, बारगाह - स्थान, ताअते हक़ - ईश्वर आराधना, कुल्ज़ुमे इश्क़ - प्रेम की नदी, मुआमला - मामला, चिलमन - पर्दा, चाक - टूटना, कुर्बे इलाही - ईश्वर सामीप्य, चिराग़ां - प्रकाश, बज्म - महफ़िल, शब - रात्रि, आखिरत - मृत्यु उपरान्त

16.आतिशे इश्क़ ने

आतिशे इश्क़ ने सीना क़बाब कर दिया
पुर रौशन कर दिया और आफ़ताब कर दिया

चश्मकें ख़त्म हुईं वस्वास सब मिट गए
जुल्मत परस्त ज़िन्दगी को महताब कर दिया

मैं तो चल पड़ा ही था दीवानगाने इश्क़ को
नफ्सानी ख़्वाहिशें ने क्यों मामला ख़राब कर दिया

आसूदा था तेरे राज में यास का कुछ काम नहीं
तावानी ए मुसलसल के लिए क्यों बेताब कर दिया

मताए वेवहा मिली और दरपेश हुआ पुर निशात
तेरी आला बुज़ुर्गी ने करम बेहिसाब कर दिया

मज़ाजी ख़्वाहिशों का मारा ढूँढा जगह जगह अमां
यादे इशरते रफ्ता ने यों जीना अज़ाब कर दिया

खिरद बसीरत हक़ क़रार सब आज़मा के देख लिए
आख़िर जुनूँ अंगेजी ने 'बेनिशाँ' कामयाब कर दिया

आतिशे इश्क़ - प्रेम की आग, जुल्मत - अँधेरा, महताब - चाँद, चश्मकें - संदेह, वस्वास - अविश्वास, आफ़ताब - सूर्य, नफ्सानी ख़्वाहिशें ने - मन की भ्रामक इच्छाओं ने, आसूदा - संपन्न, यास - निराशा, तावानी - दीप्ति, मुसलसल - निरंतर, मताए वेवहा - अमूल्य पूँजी, दरपेश - प्रस्तुत, पुर निशात - पूर्ण आनन्द, मज़ाजी - दुनियावी, अमां - शरण, इशरत रफ्ता - अतीत के सुख भोग, अज़ाब - कष्ट, खिरद - ज्ञान, बसीरत - अंर्तदृष्टि, हक करार - सत्य संकल्प, जुनूँ अंगेजी - पागलपन

17.इक नज़र में कराई सैर

इक नज़र में कराई सैर बुलंद ऊंचे मुकामों की
तेरे जरखरीद गुलामों की और तेरे दीवानों की

यूँ तो मैखाने दर पेश आते गए हर सहरा
साकी की अज़मत से कदर ऊंची हुई मैखानों की

जब हाजत हुई मकबूल खुदनिसारी की मेरी
शमा रौशन हुई ब वजह हमसे परवानों की

कहने सुनने के परे जब निकल गए सब मामलात
लबों पे बातें न आईं अनकहे अफसानों की

यादें गुज़श्ता भी होंगी और होगी सरगुजिश्त
होंगी मशहूर कहानियां कभी मुझसे नाकामों की

कितनी बार करूं बयां उसके वो अल्ताफो करम
दूर कर दे अलालतें सभी बेबस इंसानों की

रोजे हिसाब जब होगा पेशे ख़ुदा मुकदमा मेरा
दास्तानें लिखीं जाएंगी 'बेनिशाँ' मुझसे दीवानों की

अलालतें - तकलीफें, ज़रखरीब - क्रय किए हुए, सहरा - रेगिस्तान, अज़मत - महानता, हाजत - इच्छा, मकबूल - पुख्ता, खुदनिसारी - जान उत्सर्ग, बवजह - कारण से, परवाना - पतंगा, गुज़श्ता - पुरानी, सरगुजिश्त - आपबीती, अल्ताफो करम - कृपाएं, रोजे हिसाब - कर्मों का लेखा जोखा, दास्तानें - कहानियां

18.आशिक़ों का कर दिया ढेर

आशिक़ों का कर दिया ढेर खामाख्वाह में
उफ़ न करी सिर चाक हुआ तुम्हारी राह में

इक मुख़्तसर सी बात है छोड़ दी हर्फो सौत
सारी कहानी कर दी बयां बस एक आह में

तलाशे हक़ में इक मुअम्मा बस बड़ा अजीब था
ढूँढता रहा ख़ुद को ही मैं तुम्हारी चाह में

राहे सुलूके इश्क़ की पुरकारियां न मुझसे पूछ
सिरकशी का चाव बहुत तुम्हारी जौलागाह में

जाने क्या बात थी ये सिला मिलता है कभी किसे
मे़राज कराई जाती है अपनी कत्लगाह में

वो मोहतसिब हैं और उनकी तौफीक भी है बेमिसाल
रहमतों को बक्शा जाता है बस इक निगाह में

मैंने तो पूछा ही था कि क्या मिलेगी मुश्क कुछ
उंडेल दी जल्वागरी 'बेनिशाँ' उसने जवाब में

सिर चाक - सिर कटनाहर्फो सौत - शब्द व आवाजें, मुख़्तसर - संक्षिप्त, बयां - कहना, तलाशे हक - सत्य की खोज, मुअम्मा - पहेली, राहे सुलूके इश्क - प्रेम मार्ग, पुरकारियां - चतुराइयाँ, सिरकशी - सिर काटना, जौलागाह - घूमने फिरने का स्थान, सिला - इनाम, मे़राज - मोक्ष, मोहतसिब - रसाध्यक्ष, तौफीक - क्षमता, मुश्क - ख़ुशबू, बरपा दी - उंडेल दी, जल्वागरी - महान कृपा

19.बेनिशाँ मेरे न होने की

बेनिशाँ मेरे न होने की दासतां मौजूद रहे
वक्ते मुर्दन हिफ्जे इमां तेरा निशाँ मौजूद रहे

जुर्रते रिंदाना किया हदे इदराक से निकल
दिले बीना वहदत का आसमां मौजूद रहे

राहत फजा की वुसअतें सोजे ग़म की इनायतें
साँस आख़िरी हो जब तक इमां मेरा मौजूद रहे

अफसुर्दगी जाती रहे उकवा में फिर ले मुक़ाम
इक़बाल तेरा रहे क़ायम ये बयां मौजूद रहे

अख़्तरे सहर हो मेरा जाविदां अफकारे अदम
मारफत के मरहलों में मेरा मकाँ मौजूद रहे

निशान मेरा तआकुब करे और मैं ग़ायब हो रहूँ
एहसां तेरा मौजूद रहे तेरा बयां मौजूद रहे

जो भी था सब कुछ बताया एक मुद्दा बाक़ी रहा
बस यही इल्तिजा 'बेनिशाँ' फैजान तेरा मौजूद रहे

वक्ते मुर्दन - मरते वक़्त, हिफ्जे इमां - निष्ठा की सुरक्षा, दासतां - कहानी, जुर्रते रिंदाना - पागल का साहस, हदे इदराक - बुध्दि की सीमा, दिले बीना - देखने वाला दिल, वहदत - एक ईश्वरवाद, राहत फजा - आनंददायक, वुसअतें - भरमार, सोजे ग़म - ग़म की तपन, इनायतें - कृपा, अफसुर्दगी - उदासी, उकवा - परलोक, इक़बाल - यश, बयां - कथन, अख़्तरे सहर - भोर का तारा, जाविदां - अमर, अफकार - चिंतन, अदम - मृत्यु, मारफ़त - ज्ञान, तआकुब - पीछा, इल्तिजा - याचना

20.गर्दूं अफलाकों से

गर्दूं अफलाकों से इक आया मेरे लिए पैगाम है
दहरे लाहूती में अब बेनिशाँ हो गया गुमनाम है

फर्क नहीं किसी मजहब में इक यकसानी है रवां
तेरे तौफीके एमाल की सीरत ही मेरा इनाम है

रूह उरूज होती गई और मैं भी फना होता गया
हाथों में बका का जाम है जबीं से तेरा सलाम है

नाकामयाब हुई हिम्मतें सिर्फ तेरी शबीह के वास्ते
रसाई ए औज़ की थाह में किस कदर नाकाम है

खुलते चले जाते हैं पर्दे जितने तय हों फासले
तेरी आलमे बिसीत देख अक्ल मेरी हैरान है

काविशें सब निहां हुईं राज़े यजदां खुल गए
तू नहीं मैं नहीं और न ही खुदा ये मेरा मुकाम है

जीस्त के इस सफ़र में आखिरी ये सबक मिला
ख़ाके आस्ताना है 'बेनिशाँ' मेरी यही पहचान है

गर्दूं अफलाकों - आसमानों, पैगाम - संदेश, बका - अमरत्व, जबीं - माथा, यकसानी - एक जैसे, रवां - प्रकट, तौफीके एमाल - कर्म क्षमता, सीरत - सद्गुण, उरूज - उठान, फना - लय, दहरे लाहूती - शून्य स्थान, शबीह - तस्वीर, रसाई ए औज़ - पहुंच ऊंचाई तक, आलमे बिसीत - विशाल बृहमांड, काविशें - मुश्किलें, निहां - लुप्त, राजे यजदां - ईश्वर रहस्य, मुकाम - स्थान, जीस्त - जीवन, ख़ाके आस्ताना - दर की ख़ाक

21.उनकी फुर्कत का वो पल

उनकी फुर्कत का वो पल हर पल गुज़ारा जाएगा
कोई हालत हो नाम उनका हरदम पुकारा जाएगा

हम हैं परवर्दा ए तूफ़ां और ये तुर्फाकारियां
फिर सँवारा जाएगा मुझे और फिर उभारा जाएगा

रंज हो ख़ुशी हो मस्ती हो या फिर कैफ़ हो
नाशाद उनकी मुहब्बत में रहकर निखारा जाएगा

जां वलब हो गया है उनका ये नेशए इश्क़
कनाअत की रिवायत को दुनिया में नकारा जाएगा

दफन हुआ तेरी गली में हुआ जो दीवानगाने इश्क़
ओ सय्याद वो तेरे आशिक़ों में शुमारा जाएगा

ये तेरी मश्शातगी और ये तेरी निगाहे क़हर
अच्छा ख़ासा तेरा आशिक ग़म का मारा जाएगा

महो खुरशीदो अंजुम हैं गवाह इस जिबह के मेरे
अब दहरे लाहूती बहर में 'बेनिशाँ' को उतारा जाएगा

फुर्कत - विछोह, नाशाद - दुःखी, परवर्दा ए तूफ़ां - तूफ़ान के पाले हुए, तुर्फाकारियां - विलक्षणताएं, रंज - दुःख, कैफ़ - शान्ति, जां वलब - मृत्यु निकट, नेशए इश्क़ - इश्क़ का डंक, कनाअत - तुष्टि, रिवायत - परंपरा, नाकारा - त्यागना, दीवानगाने इश्क़ - प्रेम से पागल, सय्याद - शिकारी, शुमारा - गिना, मश्शातगी - श्रंगार, निगाहे क़हर - प्रकोप निगाह, महो खुरशीदो अंजुम - चाँद सूरज सितारे, जिबह - क़त्ल, दहरे लाहूती - शून्य क्षेत्र, बहर - समुद्र

22.ऊंची परवाजों के बाद फिर

ऊंची परवाजों के बाद फिर लगा पता तेरे ठिकाने का
अब कितने इम्तिहान लेंगे मेरे सब्र आज़माने का

राहे तलब में ख़ुद को महशर खिराम ढूँढते
मज़ा मिला बेनिशाँ मुझे ख़ुद को रूलाने का

तू मौसीकीए मज़ाज़ी छोड़ दे मौसीकीए हकीकी लूट
छेड़ दे अंदाज फिर कोई दिल के तराने का

हो के बेसब्र मैने पेश किया था मक़तल में सर
टूटा नहीं तिलिस्म मेरे सपनों के आशियाने का

माँगी थी मेराजी मैंने तुमने हूरो गिलमा पेश कीं
क्या यही मिला था मौक़ा मुझे नज़र से गिराने का

दीवानगी की करी ख़्वाहिश पर होशियारी कर दी अता
ख़ुद में ही गुम हो गया लगा जो तीर निशाने का

मंज़िलें जब तै होंगी नफ्सकुशी जुहद तकवा की मेरी
फिर मिलेगा रास्ता 'बेनिशाँ' तुम में जा समाने का

परवाजों - उड़ानों, आशियाने - घोंसले, राहे तलब - ईश्वर की राह, तिलिस्म - जादू, महशर खिराम - प्रलयकारी चाल से, मौसीकीए मजाजी - दुनिया का संगीत, मौसीकीए हकीकी - ईश्वर का संगीत, तराने - संगीत, मक़तल - क़त्लगाह, मेराजी - ईश्वरीय दर्शन, हूरो गिलमा - जन्नत की हूरें, ख़्वाहिश - इच्छा, नफ्सकुशी - मन पर नियंत्रण, जुहद - तप, तकवा - संयम

23.दुनिया के वसवसों में

दुनिया के वसवसों में गिरफ़्तार नहीं हूँ मैं
तमाशा देख रहा हूँ यहां ख़रीदार नहीं हूँ मैं

बेवजह रज्मे ख़ैरो शर में उलझा दिया मुझे
मुजमिर हूँ कश्मकशों में गुलज़ार नहीं हूँ मैं

सर पर ले के तेरी दुआओं को ये मैं तो बेकरां
काम पूरा कर के उठूंगा अब बेकार नहीं हूँ मैं

निकल चुका हूँ अब हदे ज़िन्दगी मुस्तआर से
हवसों ख्वाहिशातों का कभी बीमार नहीं हूँ मैं

कुश्ता ए ग़म ढूंढता फिरता हूँ मैं चार सू
तेरे कूचे की दरगुज़र को क्या तैयार नहीं हूँ मैं

जब चुप हो बैठता हूँ सोजे दरूं लिए हुए
बार बार कुरेदते हो क्यों बेक़रार नहीं हूँ मैं

जाने क्यों इतना सख़्त संग दिल मैं अब हुआ
माफ़ी मिली थी 'बेनिशाँ' फिर भी अश्कबार नहीं हूँ मैं

वसवसों - इच्छाओं, बेवजह - अकारण, रज्मे ख़ैरो शर - लड़ाई अच्छाई बुराई की, मुजमिर - निहित, कश्मकशों - संघर्षों, गुलज़ार - समृध्द, बेकरां - अथाह, ज़िन्दगी मुस्तआर - माँगे का जीवन, हवसों ख्वहिशातों - इच्छाओं, कुश्ता ए ग़म - गम का मारा, चार सू - चारों तरफ, दरगुज़र - आगमन, सोजे दरूं - अंदर की आग, बेक़रार - अशांत, संगे दिल - पत्थर दिल, अश्कबार - अश्रु पूर्ण

24.तुम्हारी रहनुमाई से बेख़बर

तुम्हारी रहनुमाई से बेख़बर कोई इन्सां क्यों होगा
पिलाई जिसे खुमो सागर से वो तश्नाकाम क्यों होगा

पुर असर कर दिया दिले नातवां को तूने
जिसको निहाल कर दिया वो बेज़ुबां क्यों होगा

मुहीते बेकरां है तू खुर्शीद रहमतो अल्ताफ़ का
जो कभी रुक भी जाए वो मेरा कारवाँ क्यों होगा

लाख करलें हम नापुसिशें फिर भी करीम है तू
जिसे पता हो रहमत का तेरी वो हैरान क्यों होगा

जो चल पड़ा राहे तलब में बेसाख़्ता इक दिन
मंज़िल पर तो पहुँचेगा ही कहीं और मकां क्यों होगा

लग्जिशें आएंगी क्यों और टूटेंगे क्यों हौसले
तेरी करीमी देख कोई आखिर पशेमां क्यों होगा

मौकूफ हूँ रहमत पे तेरी नहीं हूँ मैं आशुफ्ता
जब बंदा है तेरा 'बेनिशाँ' तो इम्तिहान क्यों होगा

कारवाँ - काफिला, खुमो सागर - सुराही, तश्नाकाम - प्यासा, पुर असर - प्रभावशाली, दिले नातवां - कमज़ोर दिल, निहाल - पूर्ण, बेज़ुबां - बिना ज़ुबान के, मुहीते बेकरां - अथाह सागर, खुर्शीद - सूर्य, रहमतों अल्ताफ़ - कृपा, रहनुमाई - मार्गदर्शन, नापुसिशें - अनादर, करीम - कृपालु, रहमत - कृपा, राहे तलब - ईश्वर की राह, बेसाख़्ता - अवश्य, मकां - रुकना, लग्जिशें - लड़खड़ाहट, करीमी - दयालुता, पशेमां - लज्जित, मौकूफ - निर्भर, आशुफ्ता - व्याकुल

25.दौनों जहां को करे रौशन

दौनों जहां को करे रौशन तू वो आफ़ताब है
तेरे क़दमों ए पा में बैठ रहना बड़ा सवाब है

ज़िन्दगी कर दी रायगां बेवजह जौलागाह में
शैतानी इक चाल है ये जो बड़ी अज़ाब है

महो खुरशीदो अंजुम भी सामने हैं बे-सबात
लज्जतें दुनिया की रहीं तो फ़क़ीरी ख़्वाब है

दिले नातवां है मेरा ए सोगवार ये जान ले
ख़ुद ही अपना सवाल है और ख़ुद ही जवाब है

हफ्त आसमां की तवाफ सिर्फ़ तेरी खोज के लिए
जुदाई ने तेरी आखिर कर दिया किस्सा खराब है

शादमां तुम तो हुए खेली जो बाज़ी इश्क़ की
चित और पट दौनों तुम्हारी ये अजब हिसाब है

हद बेहद के परे है माशूक तेरी जल्वागाह
पार करी सरहदे खुदी अब 'बेनिशाँ' कामयाब है

लज्जतें - इच्छाएं, फ़क़ीरी - साधुता, क़दमों ए पा - पांवों, सवाब - पुण्य, रायगां - व्यर्थ, जौलागाह - घूमना फिरना, अज़ाब - कष्टप्रद, महो खुरशीदो अंजुम - चाँद सूरज तारे, बेसबात - व्यर्थ, रौशन - प्रकाशित, आफ़ताब - सूरज, दिले नातवां - अशक्त दिल, सोगवार - शोकाकुल, हफ्त आसमां - सातों आसमां, तवाफ - परिक्रमा, शादमां - प्रसन्न, अजब - अजीब, माशूक़ - प्रेमिका, जल्वागाह - दर्शन स्थली, सरहदे खुदी - अहं की सीमा

26.रात ज्यों ज्यों चढ़ी

रात ज्यों ज्यों चढ़ी और उफान चढ़ता गया
रूह उरुज करती गई फैजान बरसता गया

जिंदगी है कनाअत ज़िन्दगी अल्ताफे खुदा
मेरे होने का ख़ुद पर एहसान बढ़ता गया

रंगतें चढ़ती गईं जितनी भी काविशें पड़ीं
मुश्किलें आती गईं तल्खिए अय्याम गुज़रता गया

अमां मिली कहीं नहीं सुराब दर सुराब ये
अपनी ख़्वाहिशों में क़ैद इंसान मरता गया

तुगियानी खूब हुई कैफ़ियत अफशां हो गई
खुमार भी चढ़ता गया और एहतराम होता गया

पर्दों में निहां उसका राज है वहदत की गम्माज है
हर पर्दाफाशी से फिर वह मुझे हैरान करता गया

सहल हो गये मरहले और फ़िज़ा के रंग सुर्ख हुए
इस तरह 'बेनिशाँ' का ईमान निखरता गया

उरूज - उठान, फैज़ान - कृपा, कनाअत - संतुष्टि, अल्ताफ - कृपा, काविशें - मुश्किलें, अमां - पनाह, सुराब - मरीचिका, तुगियानी - बाढ़, कैफ़ियत - कृपा, अफशां - प्रगट, एहतराम - कृपा, निहां - छुपा, वहदत - एक ईश्वरवाद, गम्माज - प्रतीक, पर्दाफाशी - रहस्योद्घाटन, सहल - आसान, मरहले - तथ्य, फिज़ा - बहार, तल्खिए अय्याम - टेड़ा समय

27.कोई तो चारा होगा

कोई तो चारा होगा मेरी अफसुर्दगी के लिए
फनाइयत बड़ी है मुबारक उस वारफ्तगी के लिए

ये बहरे बेकरां और ये मेरा बेज़ार दिल
मुश्किल है लाहूती का नक़्शा एक अजनबी के लिए

कोई भी इन्फआल क्या धो पाए बद एमाल मेरे
शहीदाना जज़्बा है बाकी बस ज़िंदगी के लिए

तू है अख़्तरे सहर और मरहमे असरार है तू
उधर सारा जहाँ मुन्तज़िर तेरी सरवरी के लिए

नज्जारा ए आफरीनश तो दुनिया है देखे रोज़ रोज़
वो आँख भी तो चाहिए बेनिशाँ तेरी दीदावरी के लिए

छोड़ गुलामी नफ्स की ज़िक्रो फ़िक्र में हो महब
क्या ये क़ायदा है मुफ़ीद बाखुदा हर किसी के लिए

पेश कर दिया सिर मेरा साक़ी के क़दमों में अब फिर
दिल जिस्मों जाँ पेश हैं 'बेनिशाँ' आसूदगी के लिए

चारा - इलाज, अफसुर्दगी - उदासी, मुन्तज़िर - प्रतीक्षित, सरवरी - प्रधानता, बहरे मारफते बेकरां - ज्ञान का अथाह सागर, बेजार - विमुख, लाहूती - शून्य, इन्फआल - प्रायश्चित्त, बद एमालों - कुकर्मों, मतलूब - वान्छित, अख़्तरे सहर - भोर का तारा, मरहमे असरार - रहस्य मर्मज्ञ, फनाइयत - लीन हो जाना, वारफ्तगी - स्वच्छंदता, नज्जारा ए आफरीनश - सृष्टिकाल का दृश्य, दीदावरी - देखने वाला दिल, नफ्स - मन, ज़िक्रो फ़िक्र - जाप ध्यान, मुफ़ीद - उचित, आसूदगी - समृद्धि

28.जब तक जिऊं तेरे इश्क़ में दिल

जब तक जिऊं तेरे इश्क़ में दिल साबित मुक़ाम हो
तेरे बिन लगे न जी कुछ ऐसा इन्तज़ाम हो

दिल लगाने के ज़रिये जिदंगी मुस्तआर में बहुत
हैरत अंगेज़ नज्जारे देख क्यों अक़्ल हैरान हो

ये रंगे तगय्युर ये जवाल और ये सराब
दुनियाए आराइशे मश्शातगी में मक्र हराम हो

जीने लिए मरती है बड़ी मसरूर कौमे दुनिया
जीते जी मर जाना ये तेरा खुला पैग़ाम हो

जाने कितनी किश्ती बदलीं साहिल पाने को तेरा
कुछ तो निज़ाम हो और मेरा काम तमाम हो

बहुत हुआ कश्मकशे दहर शिकस्ताई अब हो गई
दिल से निकला मेरा ये आखिरी मुकम्मल बयान हो

हज़ार सद्‌के तुझपे जां से हज़ार सजदे तुझे जबीं से
ए तस्वीरे गैब तुझे 'बेनिशाँ' ख़ाकी का सलाम हो

साबित मुक़ाम - लक्ष्य आरूढ़, हैरत अंगेज़ - विचित्र, नज्जारे - दृश्य, जिदंगी मुस्तआर - मांगे की ज़िन्दगी, रंगे तगय्युर - परिवर्तन के रंग, जवाल - नश्वरता, सराब - मरीचिका, दुनियाए आराइशे मश्शातगी - श्रंगार की दुनिया, मक्र - मक्कारी, मसरूर - प्रसन्न, पैग़ाम - संदेश, साहिल - किनारा, निजाम - प्रबंध, तमाम - अंत, कश्मकशे दहर - जीवन संघर्ष, शिकस्ता - टूटन, मुकम्मल - पूर्ण, सद्‌के - न्योछावर, सजदे - प्रणाम, जबीं - माथा, तस्वीरे गैब - ईश्वर, ख़ाकी - धूल

29.इस दारे फ़ानी से

इस दारे फ़ानी से यों बचकर निकल गया
सिर पे करम की ली सिफ़त और सँभल गया

नौ ब नौ फुसूं आते गए राहे अफकार में
ये दीवाना तलब-ख़ू सोजे वहदत में जल गया

मुश्किलात का था वफ़ूर मौजे शोरिशी में मेरी
आख़िर दुश्वारियां देखकर वो ज़ालिम पिघल गया

आसूदा था क्या करेगी तल्खिए अय्याम भी मेरा
बहरे बेकरां की तलातुमें फिर भी सँभल गया

वो मोहतसिब हैं और इधर हूँ मैं तो खाक नशीं
उनका जमाल देख दीवाना इश्क़ मचल गया

ये हरीमे नाज़ और ऊपर से नामुरादियां
फय्याज़ीए अज्मत देख अगियार बहल गया

ओ परी पैकर कमाल ये तेरा रूख और ये नकहत
ओ बेपनाह हुस्न 'बेनिशाँ' तेरे सांचे में ढल गया

दारे फ़ानी - नश्वर संसार, तलब ख़ू - याचक, सोजे वहदत - एकईश्वरता की आग, नौ ब नौ फुसूं - नये नये जादू, अफकार - चिन्तन, सिफ़त - विशेषता, वफ़ूर - तपन, मौजे शोरिशी - कोलाहल, आसूदा - निश्चिन्त, तल्खिए अय्याम - टेढ़ा समय, बहरे बेकरां - अथाह समुन्द्र, मौजे तलातुम - उथल पुथल लहरों की, मोहतसिब - रसाध्यक्ष, जमाल - सौंदर्य, हरीमे नाज - प्रीतम का स्थान, नामुरादियां - विफलताएँ, फय्याजी - उदारता, अगियारी - शत्रु, परी पैकर - सुदंरतम, रूख - चेहरा, नकहत - सुगंधि

30.मेरी हस्ती को गर्दूं

मेरी हस्ती को गर्दूं खलाओं में सजाए जाते हैं
कुर्बे इलाही के गिरां पर्दे उठाए जाते हैं

वो शै जो कुदसियों को भी क्या होगी कभी अता
माफ़ किए जाते है ऐबों को बेशक छुपाए जाते हैं

महो खुरशीदो अंजुम भी होंगे कहीं फलक पे क़ायम
बशौक उधर बज्मे तरब में वो जगमगाए जाते हैं

सोजे दरूं लिए हुए जब मिटा नहीं वजूद
मुझपर गिरा गिरा के बर्क़ जुल्मन मिटाए जाते हैं

हूरों गिलमा की ज़रूरत नहीं अब इस खाकसार को
सर्फो पारसाई में मेरी तबीयत लगाए जाते हैं

जौके आगाही से दिल को मेरे करके मौजज़न
अज्मत चमका कर फिर क़िस्मत बनाए जाते हैं

माइल करके कुर्बत में शाने करीमी से ख़ुद अपनी
सिला ए मुहब्बत देकर 'बेनिशाँ' में समाए जाते हैं

कुर्बे इलाही - ईश्वर की समीपता, गिरां - मूल्यवान, शै - स्थिति, कुदसियों - फ़रिश्तों, अता - प्रदान, हस्ती - अस्तित्व, गर्दूं - आकाश, खला - शून्य, महो खुरशीदो अंजुम - सूरज चाँद तारे, फलक - आकाश, बज्मे तरब - प्रसन्न महफ़िल, सोजे दरूं - भीतरी आग, बर्क - बिजली, हूरों गिलमां - जन्नत की हूरें, खाकसार - क्षुद्र, सर्फो पारसाई - संयम, जौके आगाही - ज्ञान अभिरुचि होना, मौजज़न - तरंगित, माइल - झुकाकर, कुर्बत - क़रीबी, शाने करीमी - ईश्वरीय कृपा, सिला ए मुहब्बत - प्रेमोपहार

31.सारी दुआएँ बक्श दीं

सारी दुआएँ बक्श दीं सारी सजाएं बक्श दीं
उस पीराने पीर ने मुझे सारी अताएं बक्श दीं

रंगे तगय्युर होते गए बस एक वो क़ायम रहा
मुख़्तसर बात ये है कि बस वफ़ाएं बक्श दीं

फिर्का आराई के एमालों से कर दिया मुझको रिहा
बेकराएं बक्श दीं और मजमूआएं बक्श दीं

मैं तो कुछ भी न था बेसर्फा इक उदास सा
मौज़ू ए ज़दीद ये हुआ सारी सिलाएं बक्श दीं

इसके पहले कि निकले दर्द भरी मजलूम आह
ज़ौके निगाह डाल के बेपनाह गिराएं बक्श दीं

ये तेरी परवरदिगारी और तेरी मेहरबानियां
कुर्ब मयस्सर कर दिया सारी अमाएं बक्श दीं

यास नाकामी के कफ़स में कब से मैं तो बंद था
दिले हजीं मेरी 'बेनिशाँ' सारी फुगाएं बक्श दीं

मौज़ू जदीद - नवीन विषय, सिलाएं - इनाम, रंगे तगय्युर - रंग परिवर्तन, मुख़्तसर - संक्षिप्त, फिरका आराई - फिर्का परस्ती, एमाल - कर्म, बेकराएं - असीमता, मजमूआएं - संग्रह, बेसर्फा - बेकार, अताऐं - उपहार, आहे मजलूम आह - आह दमित की, ज़ौके निगाह - रसिक दृष्टि, बेपनाह - अत्यधिक, गिराएं - मूल्यवान, कुर्ब - समीपता, अमाएं - पनाह, यास - निराशा, कफ़स - पिंजरा, दिले हजीं - दुखित मन, फुगाएं - रोना

32.शब ए मैराज के लिए

शब ए मैराज के लिए ख़्याल तेरा सजा लिया
हदे इदराके जाविदां मैंने जिदंगी में पा लिया

दौरे मसर्रत मिल गया राहत फजां भी हो गई
हकीर पड़ा था राह में तेरे करम ने उठा लिया

दिल को तो सुकूं मिला बज्मे तरब भी हो गई
तजल्ली ए तौहीद का पयाम रूह को सुना लिया

महशर खिराम चाल से पनाह मिली तेरी जात में
कैफ़ियतो इबादत लिए नसीब अपना जगा लिया

जाने किस इंतज़ार में अजल से पड़ा था मैं
ख़्याल तो गुम हो गया अबस 'बेनिशाँ' बना लिया

रज्मे ख़ैरो शर में मैं फँसा रहा क्यों रात दिन
इनायत फिर तेरी हुई और आगोश में समा लिया

शेवा ए तस्लीम मिली पर्दे मेरे खुल गए
माबूद की याद को 'बेनिशाँ' सीने से लगा लिया

शब ए मेराज़ - मिलन रात्रि, हकीर - तुच्छ, करम - कृपा, दौरे मसर्रत - चैन का समय, राहत फजां - आनंद प्राप्ति, हदे इदराके जाविदां - बुद्धि सीमा की अमरता, सुकूं - चैन, बज्मे तरब - सुखी महफ़िल, तजल्ली ए तौहीद - एक ईश्वरवाद की कृपा, पयाम - संदेश, महशर खिराम - तेज़ चाल, पनाह - शरण, कैफ़ियतो इबादत - पूजा का नशा, अजल - अनादि, अबस - बिना बस के, रज्मे ख़ैरो शर - अच्छाई बुराई की लड़ाई, आग़ोश - आलिंगन, शेवा ए तस्लीम - पूजा का स्वभाव, माबूद - प्रियतम

33.जहां तेरा जल्वा मौजज़न

जहां तेरा जल्वा मौजज़न दुनिया जन्नत क्यों कर न हो
जब कोई नहीं उसके सिवा उसकी अज्मत क्यों कर न हो

वाह तेरा बेकस्द इश्क़ वाह तेरी फुजूं जफ़ा
बेकरां पर्दे उठाए फिर क़यामत क्यों कर न हो

चार सू फैले हुए हैं शाने करीमी के ज़हूर
नूरे वहदत आश्कार हर वक्त फिर क्यों कर न हो

दावरे महशर हो नुमांया अपने जमाली शफक में
नूर मामूर हो हर तरफ़ ऐसी सूरत क्यों कर न हो

क्यों न हो उसका एहतिराम क्यों न हो उसकी नवा
मुहब्बत तेरी रहे क़ायम फिर मसर्रत क्यों कर न हो

या इलाही कर ले शुमार अपने अज़ीज़ों में मुझे
हर पल हो वो ख़ैरख्वाह उससे निस्बत क्यों कर न हो

कुल्जमे इश्क़ बह रही उसकी इनायते करम है ये
खिरामे नाज देख देख 'बेनिशाँ' मुहब्बत क्यों कर न हो

जल्वा - कृपा, मौजज़न - तरंगित, मसर्रत - ख़ुशी, बेकस्द - बिना स्वार्थ, फुजूं जफ़ा - प्रचुर अत्याचार, बेकरां - अथाह, क़यामत - प्रलय, चार सू - चारों तरफ़, शाने करीमी - ईश्वर की शान, जहूर - प्रकट, नूरे वहदत - एकईश्वरवाद का प्रकाश, आश्कार - प्रकट, दावरे महशर - प्रलय, जमाली - शांत, शफक - लालिमा, मामूर - भरा हुआ, एहतिराम - आदर, अज्मत - महानता, ख़ैरख्वाह - देखभाल करनेवाला, निस्बत - संबंध, कुल्जमे इश्क - प्रेम की नदी, खिरामे नाज - नाज भरी चाल

34.ख़ुद अपनी ही मौत से

ख़ुद अपनी ही मौत से अब गुज़रने लगे हैं हम
जश्ने बहारां में खुल कर निकलने लगे हैं हम

दौरे मसर्रत आ गया और टूट गया कोहे फ़िक्र
मुग़ालतों की जमी बर्फ़ से पिघलने लगे हैं हम

तौबा का सर पे ताज लिये और चश्मे तर लिये
पुरानी आदतें छोड़ कर अब बदलने लगे हैं हम

खुमो-सागर खुल गए हम पर कायनात में
मिली जो ये सौग़ात अब सँवरने लगे हैं हम

अपना सर मक़तल में क़ातिल को करके पेश
रफ्ता रफ्ता जिंदगी में अब मरने लगे हैं हम

तेरे तसद्दुक को सलाम तेरी अताओं पे निसार
जो माक़ूल बात थी बेसाख्ता करने लगे हैं हम

खुल गए मुकामात सभी तुगयानी ए इश्क़ में
उसके बताए रास्ते पे 'बेनिशाँ' चलने लगे हैं हम

रफ्ता रफ्ता - शनै: शनै:, जश्ने बहारां - बहारों का मेला, दौरे मसर्रत - चैन का समय, कोहे फ़िक्र - चिंता का पहाड़, मुग़ालतों - भ्रम, तौबा - प्रायश्चित्त, चश्मे तर - भीगी आंखें, खुमो-सागर - पात्र व सुराही, कायनात - सृष्टि, मक़तल - क़त्लगाह, तसद्दुक - कृपा, अताओं - कृपाओं, निसार - न्यौछावर, माक़ूल - उचित, बेसाख्ता - बेधड़क, तुगयानी ए इश्क़ - प्रेम की बाढ़, मुकामात - चक्र, खफी - गुप्त, राहे-रास्त - उचित रास्ता

35.रात भर फैजान बरसा

रात भर फैजान बरसा फिर सुबह क्यों हो गयी
बेख़ुदी की दराजी मेरी आख़िर जिबह क्यों हो गयी

वादा किया ख़ुश आसूदगी का उसने बड़े अन्दाज़ से
मैं तो था कुश्ता ए ग़म फिर सुलह क्यों हो गयी

सुना था कूचा ए यार में निकलेगा दीवानों का जुलूस
उनकी अंजुमन में फिर मेरी जगह क्यों हो गयी

बाज़ आए न वो अपनी मेहमान नवाज़ी से कभी
जब आसूदा था उनसे फिर जिरह क्यों हो गयी

मैं तो नशे में चूर था और वो पूरे होशियार
उनकी भी हालत फिर यों मेरी तरह क्यों हो गयी

तसव्वुफ के मामले भी यूं तो अजीब संगीन थे
बातें फिर जब साफ़ थीं लेकिन शरह क्यों हो गयी

बाक़ी नहीं बचा फिर उनकी सरवरी में भी मैं
मेरे होने की 'बेनिशाँ' फिर वजह क्यों हो गयी

आसूदा - संतुष्ट, जिरह - बहस, दराज़ी - लंबाई, जिबह - सिर काटना, आसूदगी - संतुष्टि, कुश्ता ए ग़म - ग़म का मारा, कूचा ए यार - प्रियतम की गली, अंजुमन - महफ़िल, फैजान - कृपा, तसव्वुफ़ - दर्शन, शरह - व्याख्या, सरवरी - सरदारी

36.पराये से हो गए हैं

पराये से हो गए हैं ये जाने पहचाने लोग
बावजूदे एतराफ़ के हो गए बेगाने लोग

आखिर फिर चश्मे फुसूंसाज ने मुझको तमाम कर दिया
शहर में सारे फैल गई जो बात लगे छुपाने लोग

मसर्रते जीस्त मिली नहीं वक़्त निकला हाथ से
कैसे ये दीवाने लोग और कैसे ये बेगाने लोग

एक और शिकार हो गया उनकी निगाहें नाज का वहां
अफसुर्दा होकर लगे लहद मेरी उठाने लोग

बज्मे निगारां छोड़ कर सब दैरो हरम को चल पड़े
मैकदे जब सब लुट गये लगे शोर मचाने लोग

मेरा ही तो क़ुसूर था जो राज अफ्शां कर दिया
मरते चले जा रहे हैं जीने के बहाने लोग

इज्तराबी में सारा जहां उस शफक को ढूँढा फिरा
कोई तो मिला नहीं लगे 'बेनिशाँ' को आज़माने लोग

एतराफ़ - स्वीकार, बेगाने - पराए, अफसुर्दा - उदास, लहद - अर्थी, मसर्रते जीस्त - जीवन संतोष, चश्मे फुसूंसाज - जादुई आँखें, तमाम - समाप्त, बज्मे निगारां - सुदंरियों की महफ़िल, दैरो हरम - मंदिर मस्जिद, मैकदे - शराबख़ाने, अफ्शां - प्रकट, इज्तराबी - व्याकुलता, शफक - सूर्य की लालिमा

37.बाँध ले जो दरिया को

बाँध ले जो दरिया को ऐसे साहिल में नहीं हूँ मैं
फ़ना हूँ तेरे कुर्ब में महमिल में नहीं हूँ मैं

तायरे लाहूती हूँ मैं और ऊँची मेरी परवाज़ है
सैय्याद होगा मुश्किल में मुश्किल में नहीं हूँ मैं

ख़ुद में भी नहीं हूँ मैं सनम आशना भी नहीं
जीता हूँ तेरी याद में महफ़िल में नहीं हूँ मैं

सोजे दरूं दिल में लिए एक बेपनाह आग
दौरे सफ़र हूँ चल रहा किसी मंज़िल में नहीं हूँ मैं

कुर्बते पैहम में हूँ फ़ना राहत फ़जा में हूँ बका
शम्सो कमर का हूँ आसमां आबो-गिल में नहीं हूँ मैं

अपनी इशरत को पहुँच हो गया कामिल शहीद
रास्ते में जो मायूस हों उन बिस्मिल में नहीं हूँ मैं

ख़ाकी हूँ तेरे दर का तेरे दिले हजीं तेरे शहर का
अस्ल बात है यही 'बेनिशाँ' महे कामिल नहीं हूँ मैं

फ़ना - लय, कुर्ब - सामीप्य, महमिल - पर्दा, तायरे लाहूती - शून्य का पक्षी, परवाज़ - उड़ान, सैय्याद - शिकारी, सनम आशना - मूर्ति पूजक, दरिया - समुद्र, साहिल - तट, सोजे दरूं - अन्तर्अग्नि, इशरत - पूर्णता, बिस्मिल - घायल, कुर्बते पैहम - समीपता की निरंतरता, राहत फ़जा - आनंददायक, शम्सो कमर - चाँद सूरज, आबो-गिल - मिट्टी पानी, दिले हजीं - दुखित मन, महे कामिल - पूर्णचंद्र

38.बेअदब बेनसीब होता है

बेअदब बेनसीब होता है बाअदब बानसीब होता है
जो उनका हबीब होता है वो जहां का हबीब होता है

राहे सुलूक की रवायतें अब पूछ न मुझसे तू
जो जितना अमीर होता है उतना ही ग़रीब होता है

कूए इश्क़ में चौखट पे रखदे फिर तू अपना सिर
कुर्बान कर गया जो गर्दन मुक्कमल अदीब होता है

रहगुज़र तसव्वुफ का जनाब ये रास्ता ए आम नहीं
इसमें जिसे मिले दाख़िला वो ख़ुशनसीब होता है

पीरो मुर्शिद औलिया गिराम माँगते हैं सबकी ख़ैर
न कोई रक़ीब होता है उनका न कोई खतीब होता है

पीरे मुगां की महफ़िल ज़रिया ताअते हक़ का भी है
गैरियत सुपुर्दे खाक हुई ये रिश्ता अजीब होता है

तौहीद की तजल्ली देखी और रसाई मिली तेरी ज़ात में
जितनी तू कुर्ब करे अता 'बेनिशाँ' क़रीब होता है

बेअदब - जो आदर नहीं करता, बेनसीब - भाग्यहीन, बाअदब - जो आदर करता है, बानसीब - भाग्यवान, हबीब - प्रिय, सुलूक - उच्च व्यवहार, रवायतें - नियम, कूए इश्क़ - प्रेम की गली, मुक्कमल - पूर्ण, अदीब - संस्कारी, रहगुज़र - रास्ता, तसव्वुफ़ - दर्शन, पीरो मुर्शिद - गुरु जन, औलिया गिराम - जन्मजात संत, रक़ीब - शत्रु, पीरे मुगां - मैकदे का मालिक, ताअते हक़ - ईश्वर आराधना, गैरियत - दूरी, सुपुर्दे ख़ाक - मिट्टी में मिल गई, तौहीद - एक ईश्वरवाद, तजल्ली - कृपा, रसाई - पंहुच, कुर्ब - सामीप्य

39.पहुँच गया आखिर वहाँ तक

पहुँच गया आखिर वहाँ तक जहाँ खुदाई है बनी
ख़ुद में गुम हो गया जहाँ यकताई है बनी

अंजुमन के शोर में खिलवतगरी मुहाल है
दिल ले चल उस दयार में जहाँ तन्हाई है बनी

पीरे मुगां की जल्वागिरी देखना आसान है नहीं
या चले चल ए दिल वहाँ जहाँ बीनाई है बनी

लड़ने के वास्ते जंगजू दुनिया की तस्खीरों से तेरी
इंतज़ामे दीद के लिए ये ज़ाहिदाई है बनी

जज्बो सुलूक के मरहलों से उठाके मुझको एक दिन
फ़ना किया जाते-हक़ में जहां किबरियाई है बनी

बज्मे तरब गुम न होना चलते रह मंज़िल है दूर
कैफ़े मस्ती के मतलूब पारसाई है बनी

कैसा ये मुक़ाम है जहाँ मैं तू नहीं और नहीं है खुदा
'बेनिशाँ' सदा आई जाते हक़ से यहाँ इब्तिदाई है बनी

कैफ़े मस्ती - शांति आनंद, मतलूब - वांछित, पारसाई - पवित्रता, यकताई - अद्वितीय, अंजुमन - महफ़िल, खिलवतगरी - एकांत, मुहाल - मना, दयार - जंगल, पीरे मुगां - मैखानों का मालिक, जल्वागिरी - प्राकट्य, बीनाई - आंखों से देखना, जज्बो सुलूक - प्रेम व व्यवहार, मरहलों - स्थानों, फ़ना - लय, किबरियाई - बुज़ुर्गी, तस्खीरों - संमोहन, इंतज़ामें दीद - दर्शन, जाहिदाई - संयम, बज्मे तरब - प्रसन्न महफ़िल में, जाते-हक़ - ईश्वर, इब्तिदाई - प्रारम्भ

40.निशां मिटा के अपना

निशां मिटा के अपना फिर ये ग़ज़ल कहता हूँ
जाविदां शग़ल कहता हूँ आबरू ख़लल कहता हूँ

खुदनिगारी किसकी करूँ जब मैं ख़ुद में मैं नहीं
रज्मे ख़ैरो शर को मैं खिरद की दखल कहता हूँ

बेकुलाही मैं हो गया जहूरे हस्ती से कि अब
अपनी हस्ती को ज़ाते मुतलक की नक़ल कहता हूँ

अफलाक से उतरी बर्क़ कर दी सीने में दफन
फनाई ए खला को वहदत की फसल कहता हूँ

जादुई आँखों से जो नज्जारा देखा करता था ख़ास
दुनिया की बीनाई को हुबाबे-बेमहल कहता हूँ

उफक से जो उतरी हवा-ए-तरब ऐसी कमाल
नामुदार हुआ ऐसा सबको अपनी शकल कहता हूँ

गिरेबां चाक लिए हुए ये अदना घूमा गली गली
इब्तिदाई में क़ायम हुआ 'बेनिशाँ' असल कहता हूँ

जाविदां - अमर, शग़ल - नियम, ख़लल - भ्रष्ट, खुदनिगारी - आत्मनिरीक्षण, रज्मे ख़ैरो शर - अच्छाई बुराई की लड़ाई, खिरद - ज्ञान, बेकुलाही - नंगा सिर, जहूरे हस्ती - हस्ती प्राकट्य, जाते मुतलक - ईश्वर, अफलाक - आसमान, बर्क - बिजली, खला - शून्य, बीनाई - देखना, हुबाबे - बुलबुला, बेमहल - असंगत, उफक - क्षितिज, हवाए-तरब - हर्षित हवा, नामदार - प्रकट, गिरेबां चाक - कटा गला, ख़ाकसार - क्षुद्र, इब्तिदाई - आरंभ, क़ायम - पूर्ण स्थित

41.ढूँढता रहा उम्र भर

ढूँढता रहा उम्र भर वो हमनशीं नहीं मिली
दिलकशीं नहीं मिली मज़हबीं नहीं मिली

उफ भी नहीं करी शहादत के खेल में
सर चाक हो गया जवां तलबी नहीं मिली

नफी का सुराब था और खला का हुबाब था
मेरे होने की न पूछ जब आस्तीं नहीं मिली

चश्मे तर लिए हुए आखिरश मायूस हुआ
परी पैकर नहीं मिली हमनशीं नहीं मिली

कल्बे मुज्तर ढूँढता तखय्युल में ख़ुद को ही मैं
क़याम उनका बेकरां जिसकी ज़मीं नहीं मिली

इज्तराबी की हद न पूछ पशीमां मैं था नहीं
जान भी बवाल हुई और जानशीं नहीं मिली

तासीरे गम की वजह से सारे गिले मिट गये
दिले खुलूस मिला 'बेनिशाँ' दिले हजीं नहीं मिली

हमनशीं - प्रियतमा, परी पैकर - सुन्दरतम, दिलनशीं - दिल को लुभानेवाली, शहादत - समर्पण, चाक - टुकड़े, जवां तलबी - अत्याचार सहना, नफी - न होना, सुराब - मरीचिका, खला - ख़ाली, हुबाब - बुलबुला, चश्मेतर - भीगी आँखें, आखिरश - अंततः, मायूस - दुःखी, कल्बे मुज्तर - व्याकुल दिल, तखय्युल - कल्पना में, क़याम - स्थिति, बेकरां - अथाह, इज्तराबी - व्याकुलता, पशीमां - शर्मसार, तासीरे गम - गम का प्रभाव, दिले खुलूस - साफ़ दिल, दिले हजीं - दुखित मन

42.तेरी दीद की ख़्वाहिश का

तेरी दीद की ख़्वाहिश का गुनहगार हुआ हूँ मैं
सिर पेशे क़ातिल करने को बेक़रार हुआ हूँ मैं

अहसासे जियां क़ायम कुलफते ग़म हुआ दायम
ख़ुद अपनी ही जीस्त का ग़म गुसार हुआ हूँ मैं

ये तेरी खफी तिलिस्मी ये तेरी शाने करीमी
मुजरिमे शौके दीद तो जरूर हर बार हुआ हूँ मैं

कब से हूँ मुन्तज़िर ज़ौक़े इश्क में हरदम
जिदंगी-ए-मुस्तआर से न गिरफ़्तार हुआ हूँ मैं

दीदावरी की खोज में इक कासा ए शरर लिए
अल्ताफों में पिन्हा राजों का राज़दार हुआ हूँ मैं

मिलेगा मुझे कब फिर वो नायाब मौक़ा बसबाब
दिले आजार हुआ हूँ मैं तार-तार हुआ हूँ मैं

कैफ़े मस्ती लिए हुए तेरे तग़ाफ़ुल से हो मानूस
ए बेवफ़ा तेरा 'बेनिशाँ' फिर वफ़ादार हुआ हूँ मैं

दीद - दर्शन, अहसासे जियां - लुटने का अहसास, कुलफते ग़म - दुख संताप, दायम - नित्य, जीस्त - जीवन, ग़म गुसार - ग़म बाँटने वाला, खफी तिलिस्मी - छुपा तिलिस्म, शाने करीमी - ईश्वरीय कृपा, मुजरिमे शौके दीद - दर्शनाभिलाषी अपराधी, मुन्तज़िर - इच्छुक, जिदंगी-ए-मुस्तआर - माँगे की जिदंगी, दीदावरी - दर्शन, कासा - कटोरा, शरर - किरण, अल्ताफों - कृपाओं, पिन्हा - छिपा हुआ, नायाब - क़ीमती, बसबाब - सअर्थ, दिले आजार - दुखित दिल, तग़ाफ़ुल - उपेक्षा, मानूस - परिचित

43.होश उड़े जाते रहे

होश उड़े जाते रहे बाखुदा कैसा वो फैज़ान था
ख़िरद हैरान थी वल्लाह कौन सा मुक़ाम था

उस औज़ के थे सदके था उस फुसूं का मुरक्का
न दीद थी न दीदार था अबस मेरा सलाम था

सुकूते मर्ग में लरजी चले जाती यूं परवाज़ थी
गुफ्तार थी बन्द और सीना ब सीना पैग़ाम था

वो बेकिनार अफलाक था महो खुरशीदो अंजुम मेरा
फ़रिश्ते जिसकी माँगे पनाह कामिल इंसान था

रक़्स से मामूर जलसों के बीच जाने हुआ क्या
न तुमने कहा न मैंने कहा कुछ ऐसा पयाम था

नज्जारा ए फरोज़ाई ये तुम्हारे दौरे हमनवाई
कैसे न पीता मेरे नाम आया जो जाम था

ये मेहरो माह के चक्कर ये सितारे ये शामे अबद
खिरामे नाज़ देख देख क्यों 'बेनिशाँ' हैरान था

बाखुदा - हे ईश्वर, फैजान - कृपा, औज़-ऊँचाई, फुंसूं - जादू, मुरक्का - जिन्न, दीदार - दर्शन, अबस - बिना बस के, सुकूते मर्ग - मृत्यु की शान्ति, लरजी - कांपी, परवाज़ - उड़ान, गुफ्तार - बातचीत, बेकिनार - अथाह, अफलाक - आकाक्षां, महो खुरशीदो अंजुम - सूरज चाँद सितारे, रक़्स - नाच, मामूर - पूर्ण, जलसों - उत्सवों, फरोज़ाई - रौशनी, दौर - चक्र, हमनवाई - बातचीत करनेवाला, खिरद - ज्ञान, मेहरो माह - चाँद सूरज, शामे अबद - अन्तहीन शाम, खिरामे नाज़ - नाज भरी चाल

44.तेरी रहबरी ने कुछ

तेरी रहबरी ने कुछ ऐसा कमाल कर दिया
मुझको निहाल कर दिया और पाएमाल कर दिया

पहले गिलाजत दूर की फिर किया पाक साफ़
रंगते यूँ कर रंगीं कि लालो लाल कर दिया

शेवा ए तस्लीम करी अता और अज्मत हुई तेरी
सारी मुश्किलें करीं रफ़ा वो एहवाल कर दिया

न रही ख़्वाहिश कोई ना कश्मकशे दहर रही
बेफिक्र किया बहारों खिजां से वो एतदाल कर दिया

ख़ैरो आफियत ऐसी रखी दिल बेनियाज हो गया
मोड़ दी जीस्त की रौ और ख़ुश-एमाल कर दिया

अपना एतिमाद दिया और अपना दिया अल्ताफ
वो औज करी अता कि रश्के मिसाल कर दिया

क्या करूँ तेरे फज्लो रहम ने जुबां मेरी बन्द की
करम ने तेरे 'बेनिशाँ' मुझे बस लाजवाल कर दिया

रहबरी - पथ प्रदर्शक, गिलाज़त - गन्दगी, पाक साफ़ - पवित्र, पाएमाल - सद्कर्म, शेवा ए तस्लीम - पूजा की प्रवृत्ति, अता - प्रदान, अज्मत - महानता, रफ़ा - दूर, एहवाल - परिस्थिति, कश्मकशे दहर - जीवन संघर्ष, बहारों खिजां - सावन पतझड़, एतदाल - संतुलन, ख़ैरो आफियत - सुरक्षित, बेनियाज - स्वतंत्र, जीस्त की रौ - जीवन दिशा, ख़ुश एमाल - सद्कर्मी, एतिमाद - विश्वास, अल्ताफ - कृपा, औज - ऊँचाई, रश्के मिसाल - दूसरों के लिए आदर्श, फज्लो रहम - कृपा, लाजवाल - अमर

45.पेश है ये ख़ाकसार

पेश है ये ख़ाकसार ख़ुद क़ुर्बानी के लिए
निगहबानी के लिए तेरी मेहरबानी के लिए

मेरी सलाहियत न देख मेरी गुमगश्ती न देख
जिसमें सुकूत हो अता उस पामाल वीरानी के लिए

दिल मुंतज़िर है उससे कहने सुनाने के वास्ते
जो कभी न हुई बयां ऐसी कहानी के लिए

करते हैं खुदा बारहा करते हैं बस यही दुआ
ज़र्रे ज़र्रे पर हो तेरी महर आस्मानी के लिए

महशर खिराम और महवश है मेरा बेताब दिल
पाने मौजे इश्क़ तलातुम और तुगियानी के लिए

मेराज मुझे कर दे अता कर दे मुझे तू सरफराज़
परदे का भी उठ जाए परदा ऐसी उरयानी के लिए

सब दिया फिर सब लूटा बाक़ी शरर छोड़ा नहीं
इलाही कुछ तो छोड़ दो 'बेनिशाँ' निशानी के लिए

ख़ाकसार - मिट्टी में मिला हुआ, क़ुर्बानी - उत्सर्ग, तलातुम - उथल पुथल, तुग़ियानी - तूफ़ान, सलाहियत - योग्यता, गुमगश्ती - खो जाना, तस्लीम - प्रदान, सुकृत - शान्ति, पामाल - तबाह, वीरानी - सुनसान, मुंतज़िर - प्रतीक्षित, बारहा - बार बार, ज़र्रे ज़र्रे - कण कण, महर - कृपा, आसमानी - ईश्वरीय, महशर खिराम - प्रलयकारी चाल, महवश - चाँद जैसी सुन्दर, निगहबानी - निरीक्षण, मेराज़ - मिलन, सरफराज़ - उच्च, उरयानी - नग्नता, शरर - कण

46.दर पर तुम्हारे खड़ा है

दर पर तुम्हारे खड़ा है एक हकीर नाकाम सा
है तो कुछ हैरान सा और कुछ तश्नाकाम सा

कोई न आया पुर्सिशे हाल मुझ नातुवां का पूछने
बस एक ही मानूस मिला जो दे गया पयाम सा

ये तेरी कुर्बते पैहम फना हुआ हुबाबे खुदी
फ़क़ीरी में गम्माज़े गैरत हो गया नीलाम सा

शोरिशों से दूर होकर बसेरा उज़लत में किया
इक जुनूनी दिलशिकन ने भेजा नया पैगाम सा

हम्द उसको नापसंद फिर भी मेरी हिम्मत देखिए
मुझ गमज़दा ने साक़ी को अर्ज किया सलाम सा

नज़र कहीं भी आता नहीं पिन्हा काशानों में हुआ
वो दस्तगीर महरमी राहरोए है कोई गुमनाम सा

मामला हदे इदराक का हुआ हल वहदत ज़हूर से
उसका तदब्बुर देख 'बेनिशाँ' हो गया हैरान सा

हकीर - तुच्छ, तश्नाकाम - प्यासा, पुर्सिशे हाल - हाल पूछने वाला, नातुवां - दुर्बल, मानूस - परिचित, पयाम - संदेश, कुर्बते पैहम - समीपता, खुदी - अस्तित्व, हुबाब - बुलबुला, गम्माज़े गैरत - स्वाभिमान का प्रतीक, शोरिशों - कोलाहल, उज़लत - एकांत, दिलशिकन - दिल तोड़ने वाला, हम्द - स्तुति, गमज़दा - दुखित, पिन्हा - छुपा हुआ, काशानों - इमारतों, दस्तगीर - मददगार, महरमी - मर्मज्ञ, राहरोए - साथी, हदे इदराक - बुद्धि सीमा, वहदत ज़हूर - निर्गुण ईश्वर, तदब्बुर - दूरदर्शिता

47.मंज़िलें तय करीं नागहां

मंज़िलें तय करीं नागहां अपनी ऊँची परवाज़ से
एक नज़र में पहुँचा दिया अंजाम तक आग़ाज़ से

जज़्ब से सुलूक तक की तय कीं सब मंज़िलें
पहुँचा दिया मेरा क़ाफ़िला मिलवा दिया मेराज से

तारीकी में मुर्दा हाल सब चले जा रहे बेसबात
सबको मोड़ा किब्ला ए हक़ पे एक ही आवाज़ से

उसकी तवज्जह बेमिसाल और वुसअत पाएमाल
फज्ल से खुद के फज्ल को बक्शा बड़े अन्दाज़ से

मज़हबी ताअस्सुबों में अब कुछ भी है रक्खा नहीं
मिलेगा अब कुछ नहीं यहां पर इम्तियाज़ से

पेश्तर मोड़ दिया अब मेरा कारवाँ ए ज़िन्दगी
दुनियावी मौसिकी नहीं निकलती जीस्त के इस साज से

मैं नहीं तू नहीं और कोई अनफास नहीं
कड़ी तोड़ी हस्ती की मेरी 'बेनिशाँ' एजाज़ से

फज्ल - कृपा, अंजाम - अन्त, आग़ाज़ - आरम्भ, जज़्ब - प्रमोन्माद, सुलूक - उच्च व्यवहार, मेराज़ - मिलन, तारीकी - अन्धेरा, मुर्दा हाल - मृतक, बेसबात - क्षणभंगुर, किब्ला ए हक़ - ईश्वरीयता, तवज्जह - कृपा, बेमिसाल - अद्वितीय, वुसअत - क्षमता, नागहां - अचानक, परवाज़ - उड़ान, ताअस्सुबों - फ़र्क़ करना, इम्तियाज़ - अन्तर करना, पेश्तर- पहले, मौसिकी - संगीत, जीस्त - जीवन, अनफास - साँस, एजाज़ - कृपा

48.उनके अल्ताफों को

उनके अल्ताफों को कूजाए दिल भरना चाहिए
जीते जी मरना चाहिए मर के जीना चाहिए

वो आए महफ़िल में अंजुमन फरोज़ा हो गई
इस मताए बेवहा ख़ुशबू को बिखरना चाहिए

तल्खिए अय्याम तो यों गुज़रता जाता ही रहा
वक़्त आ गया अब उस पार भी उतरना चाहिए

वो चारसाज हैं और वो हैं भी ग़ज़ब के गमगुसार
बर्बाद हो के मुहब्बत में बेशक संवरना चाहिए

खलवतकदे में बस गोशा नशीनी हुई बज़ा
गुंबदे मीनाई से अब कोई फ़ैज़ बरसना चाहिए

राहे कुलफत के अज़ाबाब तौबा तौबा अरे तौबा
राहजन तो बहुत मिले अब कोई हमइना चाहिए

सुकूते मर्ग की मुझे उन खलाओं में है तलाश
रूदादे ज़िन्दगी को भी अब 'बेनिशाँ' ठहरना चाहिए

अंजुमन - महफ़िल, फरोज़ा - रोशन, मताए बेवहा - अमूल्य निधि, तल्खिए अय्याम - टेड़ा समय, चारसाज - उपचारक, गमगुसार - गम बाँटने वाला, अल्ताफों - कृपाओं, कूजाए दिल - ह्रदय पात्र, खलवत कदे - एकाकी का घेरा, गोशा नशीनी - एकांत, बजा - उचित, गुंबदे मीनाई - आकाशीय गुंबद, फ़ैज़ - प्रकाश, राहे कुलफत - राह के कष्ट, अजाबाब - दु:ख, राहजन - लुटेरे, हमइना - सहगामी, सुकूते मर्ग - मृत्यु की शान्ति:, खलाओं - शून्य, रूदादे ज़िन्दगी - जीवन कथा

49.उसके मुक़ाबले में कौन मौजू़

उसके मुक़ाबले में कौन मौजू़ और ग़नी दिलगीर है
जिसकी ख़ुद नुमाई की अबस टूट गयी ज़ंजीर है

हज़रात जिनके नूर से सारा जहां है पुर रौशन
उनके जैसा कौन यहाँ साहिबे तक़दीर है

गफुर्रूल रहीम है वो मददगार है सबका
सादिक़ है और सच्चा है मोहज्जिब तामीर है

महो खुरशीदो अंजुम हैं जिसके हैं ज़र्री कबा
पारसाई और फय्याजी तो उसकी जागीर है

गुंबदे मीनाई पर से कायम है पैरा नवा
सरबरा बुर्दा वो नैमते उज्मा की तदबीर है

दस्तगीर है वो हम जैसे उफ्तादों का यहां पे
राजदां ज़ात आली का सरवरी तस्वीर है

मुझको मेरी तक़दीर पर है फिर नहीं कोई गुमां
पुर्सिशो मेहरबानी का तालिब 'बेनिशाँ' हकीर है

साहिबे तक़दीर- भाग्यवान, खुदनुमाई- स्व प्रदर्शन, अबस- अचानक, मुर्शिद- गुरू, पुर रौशन- प्रकाशवान, मौजू़-उपयुक्त, गनी-धनवान, गफुर्रूल रहीम- कृतार्थ करने वाला, मोहज्जिब- विकसित, तामीर- निर्मित, ज़र्री कबा- वस्त्र, फय्याजी - उदारता, गुंबदे मीनाई- आकाशीय गुंबद, पैरा नवा - गीत गाने वाला, सरबरा बुर्दा- आचार्य, तदबीर- तरकीब, दस्तगीर- सहायक, उफ्ताद- हताश, सरवरी- अग्रणी, हकीर-तुच्छ

50.अगर करना है तरक़्क़ी

अगर करना है तरक़्क़ी तुझे ऊँची उड़ानों में
जोशे जुनूँ का मर्ज़ उठा दिल के वीरानों में

कासा लिए शौक़े दीद का उनकी गली में तो घूम आ
वक़्त ज़ाया न कर तू इन बेमहल बहानों में

सपने तो बस सुराब हैं हाथ कभी आते नहीं
इरादतन लगा दी आग दिल के आशियानों में

चोट जाने कब की है घावों की हुई कुरेद
ख़ून रिसता ही रहा मेरे ज़ख्म के निशानों में

तमन्नाए दीद का ख़्वाब इक ख्वाब ही रहा
कब से दे रहा हूँ बेपनाह आवाज़ें अज़ानों में

मुर्दा हाल चले जा रहा था जाने किस शाम से
कभी फ़क़ीर बन कर गुज़ारा उनके आसतानों में

मेरे जैसा नसीब भी क्या होगा किसी भी दोस्त का
गर्दूं ने ला बैठा दिया 'बेनिशाँ' ऊँचे ठिकानों में

आसतानों- बैठकों, कासा- कटोरा, शौक़े दीद- दर्शन, बेमहल- व्यर्थ, सुराब- मरीचिका, इरादतन-स्वयं की मर्ज़ी से, आशियानों- घोंसलों, तमन्नाए दीद- दर्शन इच्छा, अज़ानों-आवाजों, जोशे जुनूँ-उन्माद, अगियार-शत्रु, गर्दूं - भाग्य

51.जान भी ले ली

जान भी ले ली और कोई कसर नहीं छोड़ी
दिखे मुझे कोई भी ग़ैर ऐसी नज़र नहीं छोड़ी

ढूँढा किया खुदा को मैं ख़ुद की तलाश बारहा
कोई सुराग़ मिला नहीं अफसुर्दगी मगर नहीं छोड़ी

फरेबे मशीयत के भुलावे दिखावे तगैयुरात के
तेरी सवाबातों ने ये जबीं मुन्तजर नहीं छोड़ी

दिलशिकन अदाएँ तेरी और ये तरीक़ा आलिया
ख़ुद को पेशे क़दम रखने में मैंने कसर नहीं छोड़ी

मुसलसल तेरी इनायतें और इकसुई इबादत मेरी
पर नफ्स की कशमकशों ने कभी जेरो जबर नहीं छोड़ी

इधर झुकाया सिर मेरा उधर तज़ल्ली बरसा करी
मेरे होने के अहसास की दिल ने ख़बर नहीं छोड़ी

अब तो आ जाओ जानां खड़ा हूं इंतजार में
सूनी आँखें 'बेनिशाँ' ने चश्मेतर नहीं छोड़ी

अफसुर्दगी- उदासी, फरेबे मशीयत- सांसारिक फ़रेब, तगैयुरात- परिवर्तन, सवाबातों- पुण्यों, जबीं- माथा, मुन्तजर- इच्छुक, दिलशिकन- दिल तोड़ने वाली, मुसलसल- निरंतर, इकसुई- एकाग्र, जेरो जबर- अस्त व्यस्त, तजल्ली- कृपा, चश्मेतर- भीगी आँखें

52.मिलने के बाद फिर भी

मिलने के बाद फिर भी हूँ क्यूँ बेक़रार मैं
बकरम तेरे दुनिया में रहा न गिरफ़्तार मैं

मसरूर था फरेबे बेकरां में फिर क्यों रात दिन
तुमसे जो मुलाक़ात हुई हुआ बेक़रार मैं

चश्मे तर लिए हुए सोजे गम की मिली तपन
तुम्हारी फुर्कते कोहे गम का हूँ राज़दार मैं

कल्बे मुज्तर से फसुर्दा बारहा रहा था मैं
सीना फिगार मैं और गम गुसार मैं

तेरे शोला रू पर हुआ था मैं तो जाँनिसार
गमे फर्दा से बेख़बर सीना फिगार मैं

सरगुजिश्ती क्या कहूँ बिस्मिल नफ्सानी चोट से
किसी तरह बच ही गया न हुआ गुनहगार मैं

इख़्तियार में नहीं बका पहले मौत के मुझे
मरता हूँ रोज़ रोज़ 'बेनिशाँ' इंतज़ार में

सीना फिगार- क्षत सीना वाला गम गुसार- गम बाँटनेवाला, बेकरां- असीम, फुर्कते-कोहे गम- जुदाई के गम का पहाड़, शोला रू - चमकदार चेहरा, जाँनिसार- क़ुर्बान,गमे फर्दा- भविष्य का गम, कल्बे मुज्तर- व्याकुल दिल, फसुर्दा- उदास, बारहा- अक्सर, सरगुजिश्ती- आपबीती, नफ्सानी चोट से बिस्मिल- मन के भुलावे से घायल, इख़्तियार- बस में, बका - पूर्ण विलय

53.धीरे धीरे तेरी याद में

धीरे धीरे तेरी याद में फ़ना हुए ख्यालात सब
जज़्बात सब घुल गए और ज़ुदा हुए मलालात सब

जाने कितने सवालों को था मुझे उनसे पूछना
वो बज्म में ज्यों ही आए भूल गए सवालात सब

कूचा ए यार में तो आम थी जल्वागिरी
तेरे हुस्न पे निसार हुए करते रहे मुलाक़ात सब

मैं तो चुप ही बैठा रहा मुँह जोरी करता रहा नफ्स
तिरछी नज़र से देखा उसने निकाल दी ख़ुराफ़ात सब

पहुँच कर उसके जहां में पुर सुकूं हासिल हुआ
ये कश्मकशे दहर ये कुलफते राह हैं जंजालात सब

जाने कैसे उचटती हुई पड़ गई मुझ पर नज़र
ये फुसूं निगाह ये दर्से जुनूँ हैं बड़े कमालात सब

अब हाल ये है मेरा इस्तगना का दौर है
मौत दिल हो गए हैं 'बेनिशाँ' हालात सब

फुसूं निगाह- जादुई निगाह, दर्से जुनूँ - उन्मादी शिक्षा, बज्म- महफ़िल, कूचा ए यार - यार की गली, जल्वागिरी- दर्शन, निसार- कुर्बान, नफ्स- मन, पुर सुकूं- पूर्ण चैन, कश्मकशे दहर- जीवन संघर्ष, कुलफते राह- राह के कष्ट, जज़्बात- इच्छाएँ, मलालात - दुःख, इस्तगना- स्थितप्रज्ञ, मौत दिल - स्थिर मन

54.जमाले मुर्शिदी का असर है

जमाले मुर्शिदी का असर है वर्ना मैं तो ख़ाक था
सरे पा अज़ाब था बस एक मुश्ते राख था

उसकी बज्म में वल्लाह क्या गज़ब का फ़ैज़ था
कैसी वो तुगियानी थी कैसा वो सैलाब था

सकते का था आलम होशो खिरद की चुप थी लगी
चारों तरफ़ थी चाँदनी मुन्नवर महताब था

ये ही तो मौक़ा था जब पेश करूँ सिर को मेरे
सिरकशी के लिए दिल मेरा बेताब था

हर तरफ़ हू की गूँज थी जुल्जलाल तो आम था
दिल में फैली थी रौशनी जिक्र का आफ़ताब था

तरक़्क़ी के ये पैमाने काम करते नहीं वहाँ
जितना नाकाम था दुनिया में उतना ही कामयाब था

सारे ख़्वाब पूरे हुए बस एक मसला बाक़ी रहा
बका उल बका होने का 'बेनिशाँ' रह गया ख़्वाब था

जमाले मुर्शिदी- गुरू कृपा, सरे पा - सिर से पाँव तक, अजाब- कष्ट, मुश्ते राख- मुट्ठी भर राख, फ़ैज़- पूर्ण प्रकाश, तुग़ियानी सैलाब - बाढ़, होशो खिरद- मन बुद्धि, मुन्नवर- प्रकाशमान, महताब- चाँद, सिरकशी- सिर कटाना, हू-ऊँ अनहद, जुल्जलाल- पूर्ण प्रकाश, आफ़ताब- सूर्य, पैमाने- तराज़ू, बका उल बका-पूर्ण विलय

55.सारे इसियां निसियां माफ़ हुए

सारे इसियां निसियां माफ़ हुए ख़ुशगवार हो गया
दिले सदचाक हो गया और दरकिनार हो गया

कुलफते राह ख़त्म हुए तस्कीने दिल हुई अयां
उसकी खुशखुल्की जो देखी एतबार हो गया

दानिशवरी मिल गई एतकाद पैदा हुआ
इंबिसात जो मिला बेक़रार हो गया

अक़्ल सलीम जो हुई नश्वोनुमाई मिल गई
अश्कबार हो गया और तार-तार हो गया

आके समाए वो मुझमें ख़ुद मेरा वजूद मिट गया
ख्वाहमख्वाह उनका मुझे क्यों इंतज़ार हो गया

ऐसी निगाहें नाज से देखा मुझे था एक रोज़
मुकल्लिद उनका हो गया और वफ़ादार हो गया

रूह उरूज करती गई फ़ासले सब ख़त्म हुए
ज्यों तुगियानी बढ़ी 'बेनिशाँ' दीवानावार हो गया

इसियां निसियां - सुकर्म कुकर्म, इंबिसात - आनंद, कुलफते राह- राह के कष्ट, तस्कीने दिल- दिल की शांति, खुशखुल्की- सुन्दर व्यवहार, दानिशवरी- बुद्धिमत्ता,एतकाद-श्रद्धा, दिले सदचाक- दिल के सौ टुकड़े, नश्वोनमाई- नया रूप, अश्कबार-आँसू भरा, वजूद- मौजूदगी, ख्वाहमख्वाह- चाहे बिना चाहे, मुकल्लिद- अनुगामी, उरूज-ऊँचाई,तुगियानी- बाढ़

56.भूल जाऊँ तेरे इश्क में

भूल जाऊँ तेरे इश्क में मैं दुनिया और दीन को
कायनाते जहान को और दहरे तिलस्मीन को

कश्मकशों के झगड़ों से मैं जूझता ही तो रहा
इल्लाह अभी भरोसा है मुझे मेरे यक़ीन को

और कोई नहीं है बस सिर्फ़ वसीला है तेरा
बुलन्दी कर दी अता मुझसे कमतरीन को

बेवजह मजाजी सुराबों में भटकता ही रहा
क्या होगा हासिल मुझ जैसे तमाशबीन को

जिस भी घर को खोजा निकला बस तेरा ही घर
लेकिन मिला नहीं कोई घर मुझसे मकीन को

नफ्सानी ख़्वाहिशों की हमेशा खाता ही रहा चोट
कैसे मिले मंज़िलत मेरे इस दिले नुक़्ताचीन को

तेरे क़दम पा मिल गए और सब अज़ाब मिट गए
पुर मुसर्रत मिल गई 'बेनिशाँ' मुतमईन को

दीन-ईश्वर, कमतरीन-क्षुद्र, कश्मकशों- संघर्षों, वसीला- साथ, कायनाते जहान- विश्व, दहरे तिलस्मीन- जादुई संसार, मजाजी- दुनियावी, सुराबों- मृग मरीचिकाओं, मकीन-रहनेवाला, नफ्सानी-मन की, मंज़िलत- प्रशंसा, नुक़्ताचीन- छिद्रान्वेषण, अज़ाब- कष्ट, पुर मुसर्रत-पूर्ण संतोष, मुतमईन- संतुष्ट

57.नूरे वहदत से मेरा हो

नूरे वहदत से दिल मेरा हो पुर मुनव्वर रोज़ रोज़
बेख़बर हर रोज़ रोज़ चश्मेतर हर रोज रोज

इस कश्मकशे दहर में सिर्फ़ एक ही वसीला है तू
या खुदारा करूँ ज़ियारत तेरे दर हर रोज़ रोज़

राहे तलब में ये मेरा कारवाँ क्यों कर रूके
तेरी ढूँढ में मेरा हो फेरा हर शहर हर रोज़ रोज़

ज़िन्दगी जीने का तरीक़ा मुर्शिदे कामिल ने दिया
मुर्दा दिल हो कर रहूँ पर जिऊँ खुशी खुशी हर रोज़ रोज़

बिना अब इक दूसरे के कुछ सोचना भी तो मुहाल है
हर घड़ी तेरा साथ रहे ओ हमसफ़र हर रोज़ रोज़

सिर्फ़ चेहरे पे ही मेरे साया ए जमाल काफ़ी नहीं
अन्दर तक उतर जाए मेरे उसका असर हर रोज़ रोज़

खुशखुल्क तू कर दे मुझे हमाओस्त बना दे तू मुझे
वहदत का नक्शा हो 'बेनिशाँ' कारगर हर रोज़ रोज़

नूरे वहदत- ईश्वर प्रकाश, पुर मुनव्वर- पूर्ण प्रकाशित, चश्मेतर- आँसू भरी, कश्मकशे दहर- जीवन संघर्ष, वसीला-केन्द्र या साथ, ज़ियारत - परिक्रमा,राहे तलब- ईश्वरीय राह, मुर्शिद कामिल- पूर्ण गुरू, साया ए जमाल- सौन्दर्य की छाया, खुशखुल्क- सुन्दर व्यवहार, हमाओस्त- अहं ब्रह्म

58.उसकी निगाहें नाज़ से

उसकी निगाहें नाज़ से बस लहुलुहान हो
हफ्त आसमां चीर दे कुछ ऐसी उड़ान हो

निस्बती नुक़्ते निगाह जिसके पास हो
क्या मज़ा हो जब राजदां मेरा पासबां हो

अजल से लेकर आज तक जो न हुई नुमूद
जो कभी कही न सुनी वो दास्तान हो

दीवानगाने इश्क़ और ये दर्से जुनूं
दस्तगीर हो वो मुझसे शादमां हो

बदरजे गायते तकमील हो गई मिसाल
जोड़ दे टूटे दिलों को ऐसी ज़ुबान हो

वल्लाह ये तेरी पुर्सिशो मेहरबानियाँ
मरने को हो ज़मीं जीने को आस्मान हो

सिर चाक कराने की मुझमें तमीज़ हो
मुर्शिद के मक़तल में 'बेनिशाँ' इम्तिहान हो

निगाहें नाज़ - प्रेम भरी निगाह, निस्बती नुक़्ते निगाह - सापेक्षिक निगाह, पासबां - रक्षक, अजल - सृष्टि प्रारम्भ, नुमूद - प्रकट, दास्तान - कहानी, दीवानगाने इश्क - प्रेम पथिक, दर्से जुनूं - उन्माद शिक्षा, शादमां - प्रसन्न, बदरजे गायत - अति उच्च, तकमील - पूर्णता, पुर्सिशो मेहरबानियाँ - आदर सत्कार, हफ्त आसमां - सातों आसमान, सिर चाक - सिर कटवाना, मुरशिद - गुरू, मक़तल - क़त्लगाह

59.हुस्नो इश्क के वलवले थे

हुस्नो इश्क के वलवले थे क्यों सँभल गए
तमन्ना लिए दीद की अब क़दम निकल गए

ए दिले मुज्तरी मेरी हालत न मुझसे पूछ
जाने कितने मजमुआत उस पल में पल गए

इत्तबाह कामिल का मैं करता ही यूँ रहा
अरमान मचल गए सब अजाब ढल गए

ये कुव्वते कश्फी और ये नामुरादियां
अरमान जितने उठे एक एक करके ढल गए

चश्मे इल्तिफात से जब हुआ मैं दो चार
बेमहल इरादे थे यों ही पिघल गए

मब्दए फ़ैयाज़ यूँ खुलता चला गया
सारे जहाँ की नियामतें मिलीं और बहल गए

मुतहम्मिल होता गया और ताब़ यूँ बढ़ी
सफ़र ज्यों ज्यों तै हुआ 'बेनिशाँ' बदल गए

वलवले- प्रभाव, मजमुआत- संग्रह, मुज्तरी- व्याकुलता, दीद-दर्शन, इत्तबाह कामिल का - पूर्ण का अनुगमन, अजाब- कष्ट, कुव्वते कश्फी- आकर्षण शक्ति, चश्मे इल्तिफात- कृपा दृष्टि, बेमहल- व्यर्थ, मब्दए फ़ैयाज़- भंडार, मुतहम्मिल- सहनीय, ताब़ - सहन शक्ति

60.तेरे फज्लो रहम को बस

तेरे फज्लो रहम को बस तुगियानी सैलाब कर दे
मेरे बद एमालों को तू फय्याजी से माफ़ कर दे

दर दर हूँ मैं भटकता बस तेरी है मुझको ढूँढ
सब अजाबों से तू मुझे बस कामयाब कर दे

मेरा होना ही वजह है सारी मुश्किलों का मेरे
मेरे होने की हक़ीक़त को तू बेकस्द ख़्वाब कर दे

यारब हूँ मैं प्यासा तेरे रहम की इक बून्द का
या मौला हिजाबे तन से मुझे तू पाक साफ़ कर दे

खला मेरा है आसमां मेरी जौलागाह है वो
तायरे लाहूती बना दे शिगुफ्ता आफ़ताब कर दे

लेता नहीं मैं कभी गिन गिन के तेरा नाम
रखना हिसाब क्या इसका तू करम बेहिसाब कर दे

अब क्यों है देर करता जान लबों तक आ गई है
पर्दा ए हस्ती चाक कर 'बेनिशाँ' बेनक़ाब कर दे

हिजाबे तन- अस्तित्व, पाक साफ़- पवित्र, बद एमालों- कुकर्म, फय्याजी-दयालुता, अजाबों- कष्ट, बेकस्द- बेमतलब, यारब-ईश्वर, तुगियानी-बाढ़, खला- शून्य, जौलागाह-भ्रमण स्थल, तायरे लाहूती- शून्य का पक्षी, शिगुफ्ता- खिला हुआ, बेमहल- व्यर्थ, पर्दा ए हस्ती चाक- अहं का पूर्ण विलय

61.हासिल हो जाए

हासिल हो जाए पुल और महशर में साथ पीरों का
ये तेरी निगाहे करम और ये टूटना जंजीरों का

सारी कायनात तो तेरे होने की मिसाल है
महो खुरशीदो अंजुम नाम हैं तेरे ज़ख़ीरों का

जब तू करीम है तेरी रहमत की नहीं मिसाल
ख़ामियाज़ा भुगतना पड़ेगा क्या मुझ से तकसीरों का

ये तेरा दिल मुझपे आना और फैजान की ये बारिश
तेरे कदमों पा में रहने का हक़ है हम से हकीरों का

मत भूल मजाज़ी दौलतें हैं नहीं किसी के काम की
रोज़े महशर हिसाब होगा न लेखा जोखा जागीरों का

और तो कुछ मेरे पास नहीं यही तोशा हकीर सा है
अल्लाह के दस्तगीरों का रौशन अफ़रोज़ पीरों का

हर वक़्त संजीदगी क्या कुछ बातचीत भी करो
तेरी बज्म में ज़रूरी है रहना 'बेनिशाँ' से दिलगीरों का

पुल- सिराात का पुल, महशर- प्रलय, हकीर-तुच्छ, कायनात- सृष्टि, महो खुरशीदो अंजुम- चाँद,सूर्य,तारे, ज़ख़ीरों- ख़ज़ानों, ख़ामियाज़ा-दंड, तालिब- जिज्ञासु, तकसीरों- गल्तियों, फैजान- कृपा, मजाज़ी- दुनियावी, तोशा - पाथेय, संजीदगी- शांत स्वभाव, बज्म- महफ़िल, दिलगीरों- दिल लगाने वाले

62.या इलाही दे मुझे

या इलाही दे मुझे कुल्लेदाइन बलाओं से निज़ात
सब खताओं से निज़ात और सब सजाओं से निज़ात

नफ्सानी हवाएँ हैं ये ख़्वाहिशों और हवसात की
दे मुझे इन बेगुदाज़ तेज़ हवाओं से निज़ात

ता उम्र पीछा किया गर्दिशे रोज़गार का
क्यों न हो नमोतबर उन सदाओं से निज़ात

गर्दिशें अय्याम में अब तो मुझको दे ही दे
पुरकारियों से भरी मुर्दन अदाओं से निज़ात

जब तेरा मजीदे करम है और तेरी अताएं बेमिसाल
जाने अंजाने किए गए दे सब गुनाहों से निज़ात

नफ्सो शैतां के जोर को कर दे तू तो नेस्तनाबूद
दुनिया में जो खींच लें दे उन निगाहों से निज़ात

और आख़िर में यारब ये भी तू कर दे करम
बुताने सितमगर की 'बेनिशाँ' सब वफाओं से निज़ात

कुल्लेदाइन बलाओं- कष्ट विपत्तियों, निज़ात - मुक्ति, नफ्सानी-मन सम्बन्धी, हवस- इच्छाएँ, बेगुदाज़- अप्रभावकारी, ता उम्र- पूरी आयु, गर्दिशें रोज़गार- संसार चक्र, नमोतबर- अविश्वसनीय, गर्दिशें अय्याम- काल चक्र, पुरकारियों- चालाकियाँ, मजीद- महान, नेस्तनाबूद- बंद, यारब- ईश्वर, बुताने सितमगर- कठोर प्रियतम

63.हक़ीक़त किसी मज़हब की

हक़ीक़त किसी मज़हब की मोहताज नहीं है
ये वो मुअम्मा है जिसका कोई राज नहीं है

दुनिया ये क़ायम है नफ्सो शैतां के बावजूद
खेल है हकीकी का ये मजाज़ नहीं है

खला में गुम हो गया मासियत से गया निकल
तायरे लाहूती को कोई आवाज़ नहीं है

हद के बाद आता है फिर बेहद का दायरा
उस बेहद से परे फिर कोई परवाज नहीं है

तै होते गए फ़ासले सब मरहले गुज़र गए
कहाँ ले जाएगा इश्क ये अंदाज नहीं है

फज्लो करम से ये दिल मेरा अब मौतदिल हुआ
खैरोशर में अब कोई इम्तियाज़ नहीं है

कहीं भी पहुँच जाए और कितना भी आगे
अस्ल बात ये है कि 'बेनिशाँ' सरफराज नहीं है

मुअम्मा- पहेली, नफ्सो शैतां- मन माया, हकीकी-सत्, मजाज- दुनियावी, खला-शून्य, मासियत- अज्ञान, तायरे लाहूती- शून्य का पक्षी, परवाज- उड़ान, मरहले-स्थान, खैरोशर- अच्छाई बुराई

64.या खुदा दूर कर

या खुदा दूर कर ताअस्सुबी ख़्यालों से मुझे
इलाही पुर नूर कर दे अपने उजालों से मुझे

कभी न हो मुझे परेशानियाँ किसी जवाब में
जो कभी ख़त्म न हो उन सवालों से मुझे

धोखा है फ़रेब है ये नफ्स ए मुस्तआर है
दूर ही रख बस इन दिलकश जंजालों से मुझे

मेरे बस की बात नहीं अब तू ही कुछ कर गुजर
शर्मसार कर दे मुझे अब बदएमालों से मुझे

आसूदा मैं हो जाऊँ गर क्यों न दे मुझे निजात
इन जंजालों से मुझे और इन बवालों से मुझे

इश्क की आतिश से तू कर दे मेरा सीना राख़
जला दे ये गमे हिज़्रां अपनी मशालों से मुझे

गोद में तू अपनी जगह दे दे पनाह अपने कुर्ब में
किनारा करके ले जा 'बेनिशाँ' इन एहवालों से मुझे

ताअसुब्बी- मज़हबी, पुर नूर- पूर्ण प्रकाशित, नफ्स ए मुस्तआर- अपूर्ण मनस्, बदएमालों-कुकर्म, आसूदा- संतुष्ट, निजात- मुक्ति, बवाल- कष्ट, आतिश- आग, गमे हिज़्रां- विछोह का दुख, पनाह- शरण, कुर्ब - सामीप्य, एहवालों- स्थितियाँ

65.बुलहवस चश्मकों से

बुलहवस चश्मकों से दिल दरकिनार हो
जहां जल्वा हो तेरा वहीं फस्ले बहार हो

बेवजह है ये सारी दिल की मश्शातगी
दुनियाँ के दर्दो दुख से दिल सरशार हो

फ़िक्रे मदफन में तू कर खुद की तलाश
बेक़रार हो और क्यों न बेइख्तियार हो

दिल की मुज्तरिबी का न पूछो मुझसे हाल
वो पास और नज़दीक हों और इंतजार हो

गर्दिशे अय्याम में फिर शिकस्ता यूँ हुआ
बुताने सितमगर का भला क्यों राज़दार हो

मोहज्जिब होके राहे तलब में चल पड़ा
गुले गुलज़ार क्यों न हो पैहम बेशुमार हो

मआले आशिक़ी दिलाए तुझे बेपनाह हुस्न
तालीफ कल्बी ऐसी मिले कि 'बेनिशाँ' बेक़रार हो

बुलहवस- हवस की गुलामी, चश्मकों- भ्रम, मश्शातगी- श्रृंगार, सरशार- प्रकट, फ़िक्रें मदफन- फ़िक्र समाधि की, बेइख्तियार- अनियंत्रित, मुज्तरिबी- व्याकुलता, गर्दिशे अय्याम- संसार चक्र, शिकस्ता- टूटन, बुताने सितमगर- कठोर प्रियतम, मोहज्जिब होकर- विकसित होकर, राहे तलब- ईश्वर की राह, मआले आशिक़ी- प्रेम का परिणाम, तालीफ कल्बी- प्रेमी हृदय

66.फक्रो फ़ना की दौलतें

फक्रो फ़ना की दौलतें मिलती नहीं आसान से
ख़ुश खल्क उक्ता परस्त दिखे पड़ते हैं वीरान से

अजसरे नौ नेमतें उज्मा मिलती चली गईं
निगाहे क़हर कैफ़ियत है उसकी पहचान से

बदएतकादियों का यहाँ कोई अब गुज़र नहीं
मुरीद बनेगा जब दुआएं होंगी आस्मान से

राहे तलब में मैं नाकरदार क्यूँ हुआ
अंदोह और दर्द न पूछो मुझ नाकाम से

मुश्किल है अहसासे जियां और ये इजाज़ातें
नकूश खुर्दा ए पा क्यों छोड़ गया निशान से

रज्मे ख़ैरो शर और मेरा नापाएदार कल्ब
मताए ग़मो राहत की नुमूद उस मेहरबान से

इदराक भी नहीं है और न ही है कोई इल्म
साबित क़दम बने रहना 'बेनिशाँ' के हैं पयाम से

फक्रो फ़ना- लयता व वैराग्य, सादिक़ मुरीद- सत् शिष्य, अजसरे नौ नेमतें उज्मा- फिर से कृपाएँ, निगाहे क़हर- प्रकोप निगाह, कैफ़ियत - आनंद, बदएतकादियों- कुभाव, ख़ुश खल्क- सुखी, उक्ता परस्त- मतलबी, नाकरदार- अनुभवहीन, अंदोह और दर्द- दुख व पीड़ा, इजाज़ात-कृपा, अहसासे जियां- लुटने का अहसास, नकूश खुर्दा ए पा - पदचिन्हो से परिचित, रज्मे ख़ैरो शर- लड़ाई अच्छाई बुराई की, नापाएदार- नश्वर, मताए ग़मों राहत- गम व ख़ुशी, नुमूद- उत्पत्ति, इदराक- बुद्धि, साबित क़दम- दृढ़,स्थिर, पयाम - संदेश

67.मैं नहीं हूँ ज़रूर

मैं नहीं हूँ ज़रूर कोई बहुरूपिया है ये
समा गया मेरे वज़ूद में कोई क़ुदसिया है ये

अब मैं तो हूँ नहीं उसका ही अक्स है
महे कामिल है ये कोई शोख़ शबाबिया है ये

नज्जारा ए अफलाकी है और है एजाज़ ये
अंदाज़े करम लाजवाल बेहिसाबिया है ये

मैं नहीं हूँ मैं तो यहां किसी का हूँ आइना
निस्बती नुक़्ते निगाह और ख़त जवाबिया है ये

वो मुझमें बोलता है मैं तो हूँ ही नहीं कहीं
अजीब नज्जारा है हकीकी और मजाज़िया है ये

मेरा वजूद तो है नहीं समाया है मुझमें जो
मौतदिल हालत में है ये रहनवर्दिया है ये

हूँ खला में गुम और हूँ मैं मस्तूरे अना
इर्फाने मुहब्बत है ये 'बेनिशाँ' इंकलाबिया है ये

क़ुदसिया - फ़रिश्ता, अक्स- छाया, महे कामिल-पूर्ण चन्द्र, शोख़ शबाबिया- चंचल यौवन, नज्जारा ए अफलाकी- आकाश दृश्य, एजाज़ ए असलाफी- बुज़ुर्गों की कृपा, लाजवाल- अमर, निस्बती नुक़्ते निगाह- सापेक्षिक नज़र, वजूद- होने का भान, मौतदिल- स्थितप्रज्ञ, रहनवर्दिया- पथिक, खला- शून्य, मस्तूर- छुपा हुआ

68.वो इबादत है कैसी

वो इबादत है कैसी जिसमें कोई निशां बाक़ी रहे
न तश्ना रहे न दरूं रहे न तश्नाकाम बाक़ी रहे

होऊँ खला में आश्कार मिट जाए मेरा सब निशाँ
तुझमें गुम हो जाऊँ मैं बस तेरा नाम बाक़ी रहे

तर्क कर दूँ मैं ये दुनिया कौनेन खुदा और सिर्फ
तेरे कुर्ब में हर वक़्त मेरा क़याम बाक़ी रहे

जब तक जिऊँ मैं तो उसका आइना बन कर रहूँ
बका होऊँ उसकी ज़ात में बस ये पैग़ाम बाक़ी रहे

तेरा अक्स मुझमें मिले खोजने वालों को तेरे
मैं कहीं बचूँ नहीं बस फैजान तेरा बाक़ी रहे

मुझमें आकर तू समा जा मुझे अपनी दुनिया भेज दे
वजूद तमाम मिटता जाए कोई पयाम नहीं बाक़ी रहे

बाक़ी रहने को तो बस एक ही चीज़ बाक़ी रही
तेरी चौखट पर मेरा 'बेनिशाँ' एक सलाम बाक़ी रहे

इबादत-पूजा, निशां- चिन्ह, तश्ना- प्यास, दरूं- आग, तश्नाकाम- प्यासा, खला- शून्य, आश्कार- प्रकट, तर्क- त्याग, कौनैन- परलोक, क़याम- स्थिति, बका- पूर्ण लय, जात- ईश्वरत्व, पैग़ाम- संदेश, अक्स- छाया, फैजान- कृपा, वजूद- होना, पयाम- संदेश

69.ए मेरे दिले आशना

ए मेरे दिले आशना क्या कमाल है बेख़ुदी
ख़ुद को भूल जाने का एहवाल है बेख़ुदी

जिसे मिली बेख़ुदी वो सब कुछ भूल गया
जला दे जो दिल के दाग़ वो मशाल है बेख़ुदी

होश वाले हैं नींद में बेखुद जगे हुए
दुनिया की तलबगारी पर बड़ा सवाल है बेख़ुदी

बेख़ुदी वो पुल है जो ले जाए तेरे वतन
दौनो जहां के बीच का एतदाल है बेख़ुदी

वो ही उतरा पार जो बहरे बेख़ुदी में डूब गया
जाते हक़ में फनाइयत की मिसाल है बेख़ुदी

रंग हैं और परतें भी हैं बेख़ुदी की अलग अलग
जलाल है बेख़ुदी और जमाल भी है बेख़ुदी

यार की महफ़िल में पहुँचाती बेख़ुदी है मौतदिल
मुझ से पूछो तो 'बेनिशाँ' बस लाजवाल है बेख़ुदी

आशना- प्रेमिल, फनाइयत- लयता, तलबगारी- इच्छाएँ, एतदाल- संतुलन, बहर- समुद्र, एहवाल- परिस्थिति, जलाल- आग, जमाल- शीतलता, मौतदिल- स्थितप्रज्ञ लाजवाल- अमरता

70.अपना नाम अता किया

अपना नाम अता किया मुझे गुमनाम बना दिया
तेरी आला तवज्जह ने मुझे जाविदान बना दिया

महरमे असरार बना दिया अश्कबार कर दिया
ज़ाते हक का मुझे कामिल मुक़ाम बना दिया

जिंदीक और पिंदार था पलट दी ज़िन्दगी
शैतान से इन्सान बनाया फिर रहमान बना दिया

अपनी उकवा में मुझे किया तूने कामयाब
दुनिया की पोशिशों के लिए नाकाम बना दिया

रंगे तगय्युर ने मुझे कुछ ऐसा जा रंगा
मुकामे हैरत में ले जा मुझको हैरान बना दिया

मुझ जैसे खस्तातन को परवाज़ करी अता
अपना कायनात के राज़ों का राज़दान बना दिया

मुझ मुज्तरिब को रूहानी शराब में डुबो दिया
प्यास मेरी बढ़ा दी 'बेनिशाँ' तश्नाकाम बना दिया

रहमान- कृपालु, तवज्जह - कृपा, जाविदान-अमर, महरमे असरार- रहस्य मर्मज्ञ, अश्कबार- अश्रुपूर्ण, कामिल मुक़ाम- पूर्ण स्थान, जिंदीक और पिंदार- नास्तिक और घमंडी, उकवा-परलोक, रंगे तगय्युर- परिवर्तन के रंग, हैरत- आश्चर्य, खस्तातन- पीड़ित, मुज्तरिब- व्याकुल,शराबे शौक - ईश्वरीय मय, तश्नाकाम - प्यासा

71.इसमें मेरा कुछ नहीं

इसमें मेरा कुछ नहीं असल में तेरा फैजान था
मरहमे राज होता गया कुर्ब में क़याम था

नेमते उज्मा से मुझे हमाओस्त कर दिया
गैब से रोज़ी मिली यही मेरा इनाम था

ऊँचे थे बहुत मरहले जो तेरी नैमत से मिले
जौरे चर्ख से बचा दिया फ़ैज़ नातमाम था

इस्तिलाह कैसे करूँ दीदारे हक़ की मैं
बड़ी शदीद खलिश थी पुरअसर कलाम था

बाज़ आया कभी नहीं क्यों तू मुझसे खेलते
ओ बद्अहद मुझे तेरा नाचार सलाम था

मेरी बहबूदी के लिए इक यही था फ़ैसला
ज़िंदा शौके जां फिशां रहे उसका यही पैग़ाम था

आखिरश मैं उसका क्यों क़ादिर होता चला गया
फरमापिजीर फ़रमावदार वो 'बेनिशाँ' ग़ुलाम था

जौरे चर्ख- अत्याचार भाग्य का, मरहमे राज- राज का जानकार, कुर्ब- सामीप्य, नेमतें उज्मा-कृपा, हमाओस्त- अहंब्रह्म, गैब- ईश्वरीय, इस्तिलाह- परिभाषा, शदीद खलिश- गहरी चोट, बद्अहद- वादा न निभानेवाला, नाचार- विवश,बहबूदी- कल्याण, शौके जां फिशां- कड़ी मेहनत की चाह, क़ादिर- क़ाबू में, फरमापिजीर फ़रमावदार- आज्ञाकारी

72.कुल्जमे इश्क मुझ पर

कुल्जमे इश्क मुझ पर मेहरबान होती रहे
उनकी पुर्सिशो मिज़ाजी बस निगेहबान होती रहे

अहवाले दिल कैसे सुनाऊँ क्या मुज्तरिबी है मेरी
क़याम हो आसमान में उनसे पहचान होती रहे

बहुत हूँ क्यूँ कर भटकता कश्मकशे दुनिया में मैं
मेरी मज़ाजी ख़्वाहिशें सब नाकाम होती रहे

कबसे हूँ प्यासा कि मैं इक क़तरा मेहर को
शाद रख दारैन में ऊँची उड़ान होती रहे

खुलते गए राजे हक़ अक्ल ज्यों ज्यों उरूज हुई
जितना उसका राज जानूं बन्द ज़ुबान होती रहे

ख़ुद को ही पाता हूँ मैं बवजह जलसों के बाद
उसके जल्वे देख देख बेकैद जिंदान होती रहे

एक मुश्किल ही बची है हुबाब ए 'मैं' बचा रहा
आख़िरी पर्दा ए खुदी 'बेनिशाँ' फिर क़ुरबान होती रहे

शाद-प्रसन्न, दारैन- उच्च लोकों में, पुर्सिशो मिज़ाजी- ख़ैरख्वाही, निगेहबान- दृष्टिगत, अहवाले दिल- हृदय कथा, मुज्तरिबी- व्याकुलता, क़याम- स्थान, कश्मकशे- संघर्ष, मज़ाजी- दुनियावी, क़तरा मेहर- कृपा बून्द, कुल्जमे इश्क- प्रेम की नदी, राजे हक़- ईश्वरीय रहस्य, उरूज- उठान, जिंदान- कैद, हुबाबे मैं - बुलबुला अहम् का

73.फज्ल से बक्शी

फज्ल से बक्शी ऊँची परवाज़ मेरे सपने को
अहल सब्र किया अता दुनिया के तंज सहने को

नफ्सो इदराक के परे मिलवा दिया अपनी ज़ात से
अपने दायरे में ले जा जगह दे दी मुझे रहने को

पहुँचा दिया अपने करम से मुझे मौतदिल हाल में
उठा ले गए वहाँ जहाँ कुछ नहीं है कहने को

पहले तो फ़िक्र थी ख़ुद को बदलने की मुझे
ख़ुद ही जब गुम हो गया रहा क्या बदलने को

रोज़े जज़ा के लिए सरगर दां है दुनिया सारी
राहे अकीदत में बहुत कुछ है कर गुज़रने को

नौ ब नौ राहत फज़ा है दौरे मसर्रत ख़ूब है
हर दिन है इक दिन नया बतौर सँवरने को

उससे पूरे मिलन को मेरी ज़िन्दगी इक है क़ैद
'बेनिशाँ' मौत है नायाब तोहफ़ा तड़पता है मरने को

फज्ल- कृपा, परवाज़- उड़ान, नफ्सो इदराक- मन बुद्धि, ज़ात- स्वरूप, मौतदिल- जीवन मुक्त, अहल सब्र- उच्च धैर्य, तंज- व्यंग्य, सरगर दां- घूम रही, रोज़े जज़ा- क़यामत का दिन, राहे अकीदत- ईश्वर मार्ग, नौ ब नौ- नए नए, राहत फज़ा- आनन्द, दौरे मसर्रत- चैन का समय, वस्ल- मिलन

74.एक एक करके राजे हक़ीक़त

एक एक करके राजे हक़ीक़त दिल में खोली जाएगी
हुब्बे पीराने तरीक़त दिल मे डुबो ली जाएगी

पहले तो अपना बनाया फिर दिल अपने बस किया
वजूदे हस्ती की सिफ़त खलाओं में तौली जाएगी

ज़नाब यह इक इल्म है कहने सुनने के परे
तौहीद की बातें बफुर्सत सीने में उंडेली जाएंगी

ये वो मय है जिसे ज़रूरत नहीं आवगीन की
तेरी मखमूर आँखों से शराबे शौक़ पिरो ली जाएगी

अश्क़ ही रास्ता है पहुँच जाने को उसकी खल्क में
अश्कों की बारात आँखों में संजो ली जाएगी

जब तक न हो जाए पाक साफ़ मिलता नहीं मेराज
जाने कब कब की गिलाजत आँसुओं से धो ली जाएगी

मुझे तो है इन्तज़ार आशियाना कब जले मेरा
सारे कायनात की बर्क़ 'बेनिशाँ' दिल में समो ली जाएगी

हुब्बे पीराने तरीक़त- महान गुरुओं का तरीक़ा, वजूदे हस्ती- होने का प्राकट्य, सिफ़त- लक्षण, खलाओं- शून्य, इल्म- विद्या, तौहीद-एक ईश्वरवाद, सीना ब सीना-दिल से दिल को, आवगीन- बर्तन, मखमूर-नशीली, अश्क़- आँसू, खल्क-राज्य, नमनाक- अश्रुपूर्ण, मेराज- पूर्ण मिलन, पाक- पवित्र, गिलाजत-गन्दगी, आशियाना- घोंसला

75.तुझपे मरने वालों की

तुझपे मरने वालों की फ़ेहरिस्त में ये शहीद भी हो जाए
आ जाओ जौलागाह में तो मेरी भी ईद भी हो जाए

ऐसी तिजारत भी हो जाए हुस्न के बाज़ार में
ज़र ख़रीद हो जाए और मुस्तफीद़ भी हो जाए

कहीं भूल न जाओ तुम सारी इल्तिजाओं को मेरी
अर्ज़ मुज्तरी पेश की उसकी रसीद भी हो जाए

हक़ मिलता है किसे चौखट पे जान देने को तेरी
ग़ुलाम हूँ तेरा मैं बस दर्जा मुरीद भी हो जाए

क्या कमाल थी अदला बदली सौदा था कमाल का
दिल के बदले जान दी ऐसी ख़रीद भी हो जाए

छुपा के रखे हुए हैं जो आस्तीनों में तुमने सनम
उन नायाब नज्जारों के लिए ये चश्मदीद भी हो जाए

बहसें तो हुईं तमाम मिस्लें भी हो गईं पेश
ख़तो कितावत बहुत हुई अब 'बेनिशाँ' दीद भी हो जाए

मुरीद- शिष्य, जौलागाह- भ्रमण स्थली, मुस्तफीद़- वाजिब, इल्तिजाओं- प्रार्थनाओं, अर्ज़ मुज्तरी- प्रकट करना व्याकुलता का, फ़ेहरिस्त - सूचि, चश्मदीद- आँखों देखी, मिस्लें- फ़ाइलें, ख़तो कितावत- लिखा पढ़ी, दीद- दर्शन

76.वो आए और चले गए

वो आए और चले गए हम यहाँ यूँ ही खड़े रहे
सारे जहां के रंग फिर तेरे जुल्जलाल से भरे रहे

सकते का सा आलम था रफ़ा हुए होशो हवास
सारी हिम्मत छोड़कर हम वहां यूँ ही पड़े रहे

इशरते रफ्ता क्यों निकलती नहीं दिल से मेरे
बद एमाल याद करके शर्म से यूँ ही गड़े रहे

वो क़रीब थे सामने भी थे मुझे दीद का शौक़ था
मौक़ा दिया था क़िस्मत ने पर होश उड़े रहे

फूलों की इक चादर को फेंका जो मेरे जानिब
रंगते बढ़ती गई और उसके रंग से रंगे रहे

जुदा नहीं कर पाएगी कोई चीज़ कदमों से मुझे
अहले कुहन की यादों से बाबस्ता बराबर मिले रहे

मुकामे इस्तग़ना भी था हालत थी मौत दिल सी मेरी
जाहिरत का जोश था 'बेनिशाँ' होंठ फिर भी सिले रहे

जुल्जलाल- परम प्रकाशवान, सकते- हैरत, रफ़ा- ग़ायब, इशरते रफ्ता- अतीत का सुख भोग, बद एमाल- कुकर्म, दीद- दर्शन, जानिब- तरफ़, अहले कुहन- पुरानी, बाबस्ता- पूर्ण रूप से, मुकामे इस्तगना- स्थित प्रज्ञ, मौत दिल- रितंभरा, जाहिरत- प्रकट

77.बेचैन दिल को आराम नहीं

बेचैन दिल को आराम नहीं शब गुज़ारी किस तरह
तुमको कैसे बताऊँ ये गम आजारी किस तरह

कूचा ए यार में इधर बहुत है ज्यादा भीड़ भाड़
कब से हूँ इंतज़ार में आए मेरी बारी किस तरह

होशो हवास सब गुम हुए अक़्ल भी मुल्तवी हुई
बेख़ुदी में हूँ मुब्तिला दिखाऊँ होशियारी किस तरह

नए नए वाकियातों से सामना मेरा रोज़ है
मुक़द्दम कहानियाँ हों फिर मुझको प्यारी किस तरह

उनकी निगाहें नाज का हुआ जो घायल शाम को
चोट खाकर रही गुज़ारी रात सारी किस तरह

इम्तिहान है ये जाने कैसा हर तरह शैदा हूँ मैं
जूद कुश्तन को तैयार हूँ दिखाऊँ वफ़ादारी किस तरह

माना मैं कमजर्फ हूँ क़ाबिल नहीं हूँ दीद के
'बेनिशाँ' नाकाम से क्यों छुपाते राजदारी किस तरह

गम आजारी- विछोह कष्ट, कूचा ए यार- प्रियतम की गली, मुल्तवी- स्थगित, मुब्तिला-संलग्न, वाक़ियात- घटनाएँ, मुक़द्दम कहानियाँ - पुरानी घटनाएँ, निगाहें नाज- प्रेमिल निगाहें, जूद कुश्तन- शीघ्र मरण, कमजर्फ- अक्षम, सोगवार-दुःखी

78.चला दिया तीरे नज़र

चला दिया तीरे नज़र आग लगाकर चले गए
मेरे शौके दीद को आजमा कर चले गए

जाने कब से था नींद में चला जा रहा बेख़बर
रूह को उरूज करके राहे रास्त बताकर चले गए

तवज्जह की आग से जलाया मशाले फ़ुक्र को
ख़ुद कहीं दूर जा बैठे यहाँ घर जलाकर चले गए

शौके दीद कर दिया पैदा दिखाकर के नई ज़मीन
साजे दिल छेड़ दिया नालाकश बना कर चले गए

कश्मकशों के दौर में कुलफते राह जहाँ मिली
रज्मे खैरोशर के क़िस्से को मुझे सुनाकर चले गए

आख़िरी जो मुक़ाम था जहाँ सौंपना ख़ुदी को था
जीस्त को दी परवाज़ फिर मुझमें समाकर चले गए

देने को कुछ है नहीं क्या दूँ बदले करम के तेरे
फ़रिश्तों को भी न मिले 'बेनिशाँ' वो मय पिलाकर चले गए

उरूज- उत्थान, राहें रास्त- उचित रास्ता, हवास- होश, तवज्जह - कृपा, फ़ुक्र - फकीरी, शौके दीद- दर्शन की चाह, कश्मकशों- संघर्ष, कुलफते राह- रास्ते का कष्ट, रज्मे खैरोशर- लड़ाई अच्छे बुरे की, मुक़ाम- स्थान, जीस्त- जीवन, परवाज़- उड़ान,मय- शराब

79.दुनिया को छोड़ दर पे तेरे

दुनिया को छोड़ दर पे तेरे आ ही पड़ा जो हो सो हो
रोज़े अव्वल से हुआ अलग मैं खुद में मिला जो हो सो हो

उकता गया हूँ और कुलफते राह खत्म होती नहीं कभी
मुझ जैसे खस्ता तन को कमली में छुपा जो हो सो हो

वादा किया था तूने अज़ल में कभी न साथ छोड़ोगे मेरा
कदमों मे तेरे रख दी जान अब तेरी मर्ज़ी बता जो हो सो हो

सुराबों का मेला है गजब ज़हदे मुसलसल का है खेल चश्मक
भटकता रहा जवालों में मैं तो रूह को उठा जो हो सो हो

कभी कभी तो करते मेहर हो कभी कभी मिल जाते अचानक
सारी बातें बता दी तुमको सब कुछ कहा अब जो हो सो हो

कटता नहीं है वक़्त अपने घर पिया तेरी नगरी है बड़ी दिलकश
देख मेरी तड़प और मुज्तरी तू ले अपने में समा जो हो सो हो

रोज़े महशर जब हिसाब होगा तुम मेरी शहादत तो दे ही दोगे
'बेनिशाँ' क़बूल हैं अपनी गलतियां की है ख़ता जो हो सो हो

कुलफते राह- राह के कष्ट, अजल- प्रारम्भ, कुर्ब- सामीप्य, सुराब- मरीचिका, जहदे- संघर्ष, जवाल-मृत्यु, जीस्त-जीवन, मुज्तरी- व्याकुलता

80.ज़िन्दा है इक फ़क़ीर

ज़िन्दा है इक फ़क़ीर अन्दर इसी ज़मीन के
क्या तुम भी ज़ेरे साया हो उसी हसीन के

तू ये जान ले बका के बाद नहीं है किसी की मौत
नफ्सानी अन्दाज़ छोड़ दे मामले हैं यक़ीन के

रौशन आसमानों में तब इक तालिब ने सवाल किया
ज़ाहिर हुआ अब चार सू बतुफैल करीम के

उसकी महफ़िल मैं मेरा दखल इस तरह हुआ
हम होते चले गए रूजू मानिंद तमाशबीन के

उसकी तलाश में नफ्सो खिरद के सब मकानात ढह गए
मुझ बेवतन के लिये क्या हक़ होंगे मकीन के

जबसे मैंने छोड़ दी अपनी निगाहे नफ्सानी
मुसर्रत फिर फैल गई दिल में मुझ नुक़्ताचीन के

लुटता चला गया मैं और संवरता भी चला गया
फिर फ़ना हुआ 'बेनिशाँ' रहम से उस करीम के

ज़ाहिर-प्रकट, चार सू- चारों तरफ़, बतुफैल करीम- ईश्वर कृपा से, बका- मोक्ष, नफ्सानी- मानसिक, रौशन- प्रकाशित, तालिब-जिज्ञासु, ज़ेरे साया- भक्त, रूजू- प्रवृत, मानिंद- तरह, नफ्सो खिरद- मन बुद्धि, मकीन- मकान में रहने वाला, खुर्दबीन- यंत्र, पुर मुसर्रत- पूर्ण शान्ति, पुर्ज़े- टुकड़े